وَ اعۡلَمُوۡۤا اَنَّمَا غَنِمۡتُمۡ مِّنۡ شَیۡءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَ لِلرَّسُوۡلِ وَ لِذِی الۡقُرۡبٰی وَ الۡیَتٰمٰی وَ الۡمَسٰکِیۡنِ وَ ابۡنِ
السَّبِیۡلِ ۙ اِنۡ کُنۡتُمۡ اٰمَنۡتُمۡ بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلٰی عَبۡدِنَا یَوۡمَ الۡفُرۡقَانِ یَوۡمَ الۡتَقَی الۡجَمۡعٰنِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰی کُلِّ
شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۴۱﴾

आयत न० 41

और (मुसलमानो) **इस बात को जान लो कि जो चीज़** (काफ़िरों से) **ग़नीमत** (के माल) **की तुम को मिले तो उस का हुक्म यह है कि** (उस के कुल पांच हिस्से किये जाएं जिन में चार हिस्से तो जंग करने वाले मुजाहिदों का हक़ है और एक हिस्सा यानी) **उस का पांचवा हिस्सा** (फिर पांच हिस्सों में बान्टा जाएगा जिन में से एक तो) **अल्लाह का और उसके रसूल का है** (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिलेगा जिन को देना ऐसा है कि अल्लाह के सामने पेश कर दिया) **और** (एक हिस्सा) **आप के रिश्तेदारों का है और** (एक हिस्सा) **यतीमों का है** (एक हिस्सा) **ग़रीबों का है और** (एक हिस्सा) **मुसाफ़िरों का है अगर तुम अल्लाह पर यक़ीन रखते हो और उस चीज़ पर** (यक़ीन रखते हो) **जिस को हम ने अपने बन्दे** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर फ़ैसले के दिन** (यानी) **जिस दिन कि** (मैदाने बद्र में) **दोनों फ़ौजों** (मौमिनों और काफ़िरों) **का आपस में मुक़ाबिला हुआ था उतारी थी** (मुराद इससे फ़रिशतों के वास्ते से होने वाली छुपी मदद है यानी अगर हम पर और हमारी छुपी महरबानियों पर यक़ीन रखते हो तो इस हुक्म को मानो)**, और अल्लाह** (ही) **हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं** (फिर तुम्हारा हक़ तो इतना भी नहीं था यह भी बहुत मिमल गया)**(41)**।

नोटः- जंगे बद्र के दिन को "यौमुल फ़ुरक़ान" यानी फ़ैसले का दिन इसलिए कहा गया कि इस जंग में मुसलमानों के हक़ पर होने और काफ़िरों के नाहक़ पर होने का फ़ैसला हो गया और यह मुसलमानों की सबसे पहली खुली जीत थी और काफ़िरों की सबक़ देने वाली हार।

اِذۡ اَنۡتُمۡ بِالۡعُدۡوَۃِ الدُّنۡیَا وَ هُمۡ بِالۡعُدۡوَۃِ الۡقُصۡوٰی وَ الرَّکۡبُ اَسۡفَلَ مِنۡکُمۡ ؕ وَ لَوۡ تَوَاعَدۡتُّمۡ لَاخۡتَلَفۡتُمۡ فِی
الۡمِیۡعٰدِ ۙ وَ لٰکِنۡ لِّیَقۡضِیَ اللّٰهُ اَمۡرًا کَانَ مَفۡعُوۡلًا ۬ۙ لِّیَهۡلِکَ مَنۡ هَلَکَ عَنۡۢ بَیِّنَۃٍ وَّ یَحۡیٰی مَنۡ حَیَّ عَنۡۢ بَیِّنَۃٍ ؕ
وَ اِنَّ اللّٰهَ لَسَمِیۡعٌ عَلِیۡمٌ ﴿ۙ۴۲﴾ اِذۡ یُرِیۡکَهُمُ اللّٰهُ فِیۡ مَنَامِکَ قَلِیۡلًا ؕ وَ لَوۡ اَرٰىکَهُمۡ کَثِیۡرًا لَّفَشِلۡتُمۡ وَ لَتَنَازَعۡتُمۡ

فِى الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۴۳﴾ وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِىْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا
وَّيُقَلِّلُكُمْ فِىْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِىَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۴۴﴾

आयत न० 42 से 44

नोटः- इन आयतों में जंगे बद्र का नक़्शा खींचा गया है।

(यह वो वक़्त था कि) **जब तुम** (उस मैदान के) **इधर वाले किनारे पर थे और वो लोग** (यानी काफ़िर उस मैदान के) **उधर वाले किनारे पर थे और वो** (क़ुरैश का कारोबारी) **क़ाफ़िला तुम से नीचे की तरफ़ को** (बचा हुआ था यानी समन्दर के किनारे-किनारे जा रहा) **था, और** (वो तो अचानक मुक़ाबिला हो गया वर्ना) **अगर** (पहले से) **तुम और वो** (लड़ाई के लिए) **कोई बात तय करते** (कि उस वक़्त लड़ेंगे) **तो** (हालत ऐसी थी कि) **ज़रूर वक़्त तय करने में तुम्हारी एक राय न होती** (यानी चाहे आपस में मुसलमानों में कि सामान की कमी की वजह से कोई कुछ कहता कोई कुछ कहता और चाहे काफ़िरों के साथ कि इस तरफ़ सामान की कमी उधर मुसलमानों का रौब) **लेकिन** (अल्लाह तआ़ला ने ऐसा सामान कर दिया कि इसकी नौबत नहीं आई बेइरादा लड़ाई ठन गई) **ताकि जो काम अल्लाह तआ़ला करना चाहते थे उस को पूरा कर दें यानी ताकि** (हक़ की निशानी दिखाई दे जाए और) **जिस को बर्बाद** (यानी गुमराह) **होना है वो निशानी देख कर बर्बाद हो और जिस को ज़िन्दा** (यानी सही रास्ते पर) **होना है वो** (भी) **निशानी देख कर ज़िन्दा हो** (मतलब यह कि अल्लाह तआ़ला यह जंग चाहते थे कि मुसलमान गिनती और सामान में कमी के बावजूद जीतें ताकि इस्लाम का हक़ होना साबित हो जाए), **और बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ूब सुनने वाले ख़ूब जानने वाले** (हैं कि सच्चाई जानने के बाद भी कौन लोग ईमान लाते हैं और कौन नहीं लाते) **हैं(42)** (वो वक़्त भी याद करो कि) **जब अल्लाह तआ़ला ने आप के ख़्वाब में आप को वो लोग कम दिखाए** (बस आप ने सहाबा को इस ख़्वाब की ख़बर की उन के दिल और मज़बूत हो गये) **और अगर अल्लाह तआ़ला आप को वो लोग ज़्यादा करके दिखा देते** (और आप सहाबा से बता देते) **तो** (ऐ सहाबा रज़ि०) **तुम्हारी हिम्मतें हार जातीं और इस** (जंग के) **हुक्म में तुम में आपस में झगड़ा हो जाता** (यानी एक राय न रहती) **लेकिन अल्लाह तअ़ला ने** (इस कम हिम्मती और झगड़े से तुम को) **बचा लिया, बेशक वो दिलों की बातों को ख़ूब जानता है(43) और** (उस वक़्त को याद करो) **जब तुम एक दूसरे के मुक़ाबिले पर आए थे तो अल्लाह तआ़ला उन लोगों**

को तुम्हारी नज़र में कम करके दिखा रहे थे और (इसी तरह) **उन की नज़रों में तुम को कम करके दिखा रहे थे ताकि जो काम अल्लाह तआ़ला करना चाहते थे उस को पूरा कर दें, और सब मुक़दमे अल्लाह की तरफ़ ही ले जाए जाएंगे** (वो गुमराहों को सज़ा और नेक राह वालों को अच्छा बदला देंगे)(44)।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَ
لَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٤٦﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا
مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾

आयत न० 45 से 47

ऐ ईमान वालो जब तुम्हारा (काफ़िरों के) **किसी गिरोह से** (जिहाद में) **मुक़ाबिला हो जाए तो** (इन बातों का ध्याान रक्खो, एक यह कि) **जमे रहो** (मैदान से भागो मत) **और** (दूसरे यह कि) **अल्लाह को बहुत याद करो** (क्योंकि अल्लाह के ज़िक्र से दिल में ताक़त पैदा होती है) **उम्मीद है कि तुम** (मुक़ाबिले में) **कामयाब हो**(45) **और** (तीसरे यह कि जिहाद की सभी बातों में) **अल्लाह और उस के रसूल का कहना मानो** (कि कोई कार्रवाई शरीअ़त के ख़िलाफ़ न हो) **और** (चौथे यह कि अपने सरदार से और आपस में भी) **झगड़ा न करो वर्ना** (आपस में मेल न रहने से) **कम हिम्मत हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी** (यानी दूसरों पर रौब न रहेगा) **और** (पांचवे यह कि अगर कोई बात नागवारी की सामने आए तो उस पर) **सब्र करो, बेशक अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों के साथ हैं** (और अल्लाह के साथ होने पर उस की मदद भी ज़रूरी है)(46) **और** (छटे यह कि नीयत ख़ालिस रक्खो बड़ा समझने और दिखावे में) **उन** (काफ़िर) **लोगों जैसे मत होना कि जो** (इसी जंगे बद्र के क़िस्से में) **अपने घरों से इतराते हुए और लोगों को** (अपनी शान व सामान) **दिखाते हुए निकले और** (यह भी नीयत थी कि) **लोगों को अल्लाह के रास्ते** (यानी दीन) **से रोकते थे** (क्योंकि मुसलमानों को झटका देने चले थे जिस का असर आम लोगों पर दीन से दूरी होता), **और अल्लाह तआ़ला** (उन लोगों को पूरी सज़ा देगा वो) **उन के कारनामों को** (अपने इल्म के) **घेरे में लिए हुए है**(47)।

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ जंगों के मौक़े पर मैदाने जंग में यह ख़ुतबा दिया "लोगों दुशमन से मुक़ाबिला की तमन्ना न करो बल्कि अल्लाह तआला से सलामती मांगों और जब न चाहते हुए भी मुक़ाबिला हो ही जाए तो फिर सब्र करो और जमे रहो और यह समझ लो कि जन्नत तलवारों के साये में है"। (मुस्लिम)

وَ اِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَ قَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَ اِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَ اللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۟ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

आयत न० 48 से 49

और (उस वक़्त का इन से ज़िक्र कीजिए) **जब कि शैतान ने इन** (काफ़िरों) **को** (बहकाया कि) **उन के काम** (कुफ़्र और रसूल से दुशमनी) **बड़े अच्छे हैं और कहा कि** (तुम्हारी ऐसी ताक़त है कि तुम्हारे मुख़ालिफ़) **लोगों में से आज कोई तुम पर हावी होने वाला नहीं** (यानी तुम्हारी जीत पक्की है) **और मैं तुम्हारा हिमायती हूं** (किसी से डरने की ज़रूरत नहीं), **फिर जब दोनों फौजें** (काफ़िरों और मुसलमानों की) **एक दूसरे के सामने हुईं** (और उसने फ़रिशतों को उतरते देखा) **तो वो उल्टे पांव भागा और यह कहा मेरा तुम से कोई वास्ता नहीं** (क्योंकि) **मैं उन चीज़ों को देख रहा हूं जो तुम को दिखाई नहीं देतीं** (यानी फ़रिशते) **मैं तो अल्लाह से डरता हूं** (कभी किसी फ़रिशते से दुनिया ही में ख़बर लिवादे), **और अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाले हैं**(48) **और** (वो वक़्त भी याद करो) **जब मुनाफ़िक़ लोग** (मदीने वालों में से) **और जिनके दिलों में** (शक की) **बीमारी थी** (मक्के वालों में से मुसलमानों का जंगी सामान की कमी में काफ़िरों के मुक़ाबिले में आजाना देख कर) **यह कहते थे कि इन** (मुसलमान) **लोगों को इन के दीन ने भूल में डाल रक्खा है** (कि अपने दीन के हक़ होने के भरोसे ऐसे ख़तरे में आगये), **और** (अल्लाह तआला जवाब देते हैं कि) **जो आदमी अल्लाह पर भरोसा करता है तो** (वो अक्सर कामयाब रहता है क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त** (ताक़त वाले) **हैं** (इसलिए अपने ऊपर भरोसा करने वालों को कामयाब कर देते हैं और अगर कभी हार जाए तो उसमें कुछ वजह होती है क्योंकि) **वो हिकमत वाले** (भी) **हैं**(49)।

नोटः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० का बयान है कि शैतान क़बीला बनू बक्र के सरदार सिराक़ा बिन मालिक की सूरत में झन्डा लिए हुए एक फ़ौज के साथ काफ़िरों को बहकाने उन का हौसला बढ़ाने के लिए आया था मगर फ़रिशतों को देख कर भाग खड़ा हुआ।

وَ لَوْ تَرٰۤى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَ اَدْبَارَهُمْ ۚ وَ ذُوْقُوْا عَذَابَ
الْحَرِيْقِ ﴿۵۰﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۵۱﴾ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۵۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ
مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۳﴾ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَ اَغْرَقْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَ كُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿۵۴﴾
اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۵﴾ اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ
فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّ هُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۶﴾ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ اِمَّا
تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿۵۸﴾

आयत न० 50 से 58

और अगर आप (उस वक़्त) **देखें** (तो अचम्भा हो) **जब कि फ़रिशते इन काफ़िरों की जान निकालते हैं** (और) **उन के मुंह पर और उन की पीठों पर मारते जाते हैं और यह कहते जाते हैं कि** (अभी क्या है आगे चल कर) **आग की सज़ा झेलना(50)** (और) **यह अज़ाब उन** (कुफ़्र के) **कामों की वजह से है जो तुम ने अपने हाथों समेटे हैं और यह बात साबित ही है कि अललाह तआ़ला बन्दों पर ज़ुल्म करने वाले** (नहीं सो अल्लाह तआ़ला ने बेजुर्म सज़ा दी) **नहीं(51) उन की हालत** (बस) **ऐसी है जैसी फ़िरऔ़न वालों की और उन से पहले** (काफ़िर) **लोगों की हालत थी, कि उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया तो अल्लाह तआ़ला ने उन के** (इन) **गुनाहों पर उन को** (अज़ाब में) **पकड़ लिया, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी ताक़त वाले सख़्त सज़ा देने वाले हैं** (कि उन के मुक़ाबिले में कोई ऐसी ताक़त नहीं कि उन के अ़ज़ाब को हटा सके)**(52) यह बात इस वजह से है** (कि हमारा यह क़ानून है) **कि अल्लाह तआ़ला किसी ऐसी नेमत को जो किसी क़ौम को दी हो नहीं बदलते जब तक कि वो ही लोग ख़ुद अपनी**

हालत को नहीं बदलते और बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े सुनने वाले बड़े जानने वाले हैं(53) (बस) **इन** (काफ़िरों) **की हालत** (भी) **फ़िरऔन वालों और उन से पहले** (काफ़िर) **लोगों की सी हालत है कि उन्होंने अपने रब की आयतों को झुटलाया इस पर हम ने उन को उन के** (उन) **गुनाहों की वजह से हलाक कर दिया और** (उनमें) **फ़िरऔन वालों को** (तो दरिया में) **डुबो दिया और वो** (फ़िरऔन वाले और पहले वाले) **सब ज़ालिम थे**(54) **बेशक सब से बदतर जानदारों में अल्लाह के नज़दीक ये काफ़िर लोग हैं** (जब ये अल्लाह के इल्म में ऐसे हैं) **तो ये ईमान न लाएंगे**(55) **जिन की यह हालत है कि आप उन से** (कई बार सुलह का) **वादा ले चुके हैं** (मगर) **फिर** (भी) **वो हर बार अपना वादा तोड़ देते हैं और वो** (वादा तोड़ने से) **डरते नहीं**(56) **सो अगर आप लड़ाई में उन लोगों पर क़ाबू पाएं** (और ये आप के हाथ आएं) **तो उन को ऐसी सज़ा दें कि वो लोग भी भाग जाएं जो उन के पीछे हैं ताकि वो लोग समझ जाऐ** (कि वादा तोड़ने पर यह मुसीबत आई हम ऐसा न करें)(57) **और अगर** (अभी तक खुल कर वादा तो नहीं तोड़ा लेकिन) **आप को किसी क़ौम से धोके** (यानी समझोता तोड़ने) **का ख़तरा हो तो** (इजाज़त है कि) **आप वो** (सुलह का) **एहद उन को इस तरह लौटा दीजिए** (यानी उस समझौते के बाक़ी न रहने की ख़बर कर दीजिए) **कि आप और वो** (इस ख़बर में) **बराबर हो जाएं,** (और बिना ऐसी साफ़ ख़बर के लड़ना धोका है और) **बेशक अल्लाह तआ़ला धोका करने वालों को पसन्द नहीं करते**(58)।

नोटः- ऊपर आयत में जो ईमान न लाने की ख़बर दी गई है वो कुछ ख़ास लोगों के बारे में दी गई है जो यहूदी क़ौम से थे और सख़्त दिल थे।

मसअलाः- जब किसी क़ौम से सुलह का समझौता हो जाए तो फिर उन पर हमला करना धोका देना है अगर वो दग़ा बाज़ी करते हों तो पहले समझौता तोड़ कर उस की ख़बर देना ज़रूरी है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ
رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَ
مَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۶۰﴾ وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَ
تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۶۱﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْۤا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْۤ اَيَّدَكَ

بِنَصۡرِهٖ وَبِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝٦٢

आयत न० 59 से 62

और काफ़िर लोग यह न समझें कि वो बच गये, बेशक वो लोग (अल्लाह तआ़ला को) **मजबूर नहीं कर सकते** (कि उस के हाथ न आएं या तो दुनिया ही में अज़ाब में पकड़े जाएंगे वर्ना आख़रत में तो ज़रूर)(59) **और इन** (दुशमनों से मुक़ाबिले) **के लिए जितना तुम से हो सके हथियार और पले हुए घोड़ों से** (यानी हर तरह के असलहा का) **सामान तैयार रक्खो कि इस** (सामान) **से तुम** (अपना) **रौब जमाए रक्खो उन पर जो कि** (कुफ़्र की वजह से) **अल्लाह के दुशमन हैं और** (तुम्हारी ताक में रहने की वजह से) **तुम्हारे दुशमन हैं** (जिन से रात दिन तुम को वास्ता पड़ता है) **और उन के सिवा दूसरों** (यानी दूसरे काफ़िरों) **पर भी** (रौब जमाए रक्खो) **जिन को तुम** (यक़ीन से) **नहीं जानते** (बल्कि) **उन को अल्लाह जानता है** (कि वो भी दुशमनी रखते हैं), **और अल्लाह के रास्ते में** (जिस में जिहाद भी आ गया) **जो कुछ भी ख़र्च करोगे वो** (यानी उस का सवाब) **तुम को** (आख़रत में) **पूरा-पूरा दिया जाएगा और तुम्हारे लिए** (उसमें) **कुछ कमी न होगी**(60) **और अगर वो** (काफ़िर लोग) **सुलह की तरफ़ झुकें तो आप** (को) **भी** (इजाज़त है कि अगर इसमें भलाई समझें तो) **उस तरफ़ झुक जाइए** (यानी सुलह कर लीजिए) **और** (अगर यह ख़तरा हो कि यह उन की चाल न हो तो) **अल्लाह पर भरोसा रखिए** (ऐसे शकों से न घबराइये), **बेशक वो ख़ूब सुनने वाला ख़ूब जानने वाला है** (उन का ख़ुद इन्तिज़ाम कर देगा)(61) **और अगर** (वो शक सही साबित हो और) **वो लोग** (सचमुच सुलह से) **आप को धोका देना चाहें तो अल्लाह तआ़ला आप** (की मदद और हिफ़ाज़त करने) **के लिए काफ़ी है, वो ही तो है जिस ने अपनी** (छुपी) **मदद** (यानी फ़रिशतों) **से और** (खुली मदद यानी) **मुसलमानों से आप के हाथ मज़बूत किये**(62)।

नोटः- उलमाए तफ़सीर का बयान है कि काफ़िरों से हर हाल में सुलह कर लेने पर मदद और हिफ़ाज़त का वादा ख़ास हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए था दूसरे लोगों को अपने वक़्त के हालात के हिसाब से काम करना चाहिए।

وَ اَلَّفَ بَيۡنَ قُلُوۡبِهِمۡ ؕ لَوۡ اَنۡفَقۡتَ مَا فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا مَّاۤ اَلَّفۡتَ بَيۡنَ قُلُوۡبِهِمۡ وَلٰـكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيۡنَهُمۡ ؕ اِنَّهٗ
عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ۝٦٣ يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ حَسۡبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝٦٤ يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ حَرِّضِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ

عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنۡ يَّكُنۡ مِّنۡكُمۡ عِشۡرُوۡنَ صٰبِرُوۡنَ يَغۡلِبُوۡا مِائَتَيۡنِ ۚ وَاِنۡ يَّكُنۡ مِّنۡكُمۡ مِّائَةٌ يَّغۡلِبُوۡۤا اَلۡفًا
مِّنَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا يَفۡقَهُوۡنَ ﴿۶۵﴾ اَلۡـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنۡكُمۡ وَعَلِمَ اَنَّ فِيۡكُمۡ ضَعۡفًا ؕ فَاِنۡ يَّكُنۡ
مِّنۡكُمۡ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغۡلِبُوۡا مِائَتَيۡنِ ۚ وَاِنۡ يَّكُنۡ مِّنۡكُمۡ اَلۡفٌ يَّغۡلِبُوۡۤا اَلۡفَيۡنِ بِاِذۡنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ
الصّٰبِرِيۡنَ ﴿۶۶﴾

आयत न० 63 से 66

और (मुसलमानों को मदद का सामान बनाने के लिए) **उन के दिलों में** (मेल जोल) **मुहब्बत** (और हमदर्दी) **पैदा कर दी** (जैसा कि सब जानते हैं कि अगर आपस में मेल न हो तो कोई काम ख़ास कर दीन की मदद मिल कर नहीं कर सकते, और उनमें अपने को बड़ा समझने व आपसी दुशमनी की वजह से यह मेल जोल होना ऐसा मुश्किल था कि) **अगर आप** (अपनी कोशिश के साथ) **दुनिया भर का माल** (इस काम के लिए) **ख़र्च करते तब भी उन के दिलों में मेल जोल** (और मुहब्बत) **पैदा न कर सकते लेकिन** (यह) **अल्लाह ही** (का काम था कि उस) **ने उन में आपस में मेल जोल पैदा कर दिया, बेशक वो ज़बरदस्त हैं** (कि अपनी क़ुदरत से जो चाहे करदें और जैसे ठीक जानें उस काम को कर दें क्योंकि) **हिकमत वाले हैं(63) ऐ पैग़म्बर आप के लिए** (असलीयत में तो) **अल्लाह काफ़ी है और आप के पीछे चलने वाले मुसलमान** (वो काफ़ी हैं)**(64) ऐ पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप मोमिनों को जिहाद का शौक़ दिलाइये,** (और इस के बारे में यह क़ानून सुना दीजिए कि) **अगर तुम में के बीस आदमी** (मोर्चे पर) **जमे रहने वाले होंगे तो** (अपने से दस गुने यानी) **दो सौ पर कामयाब हो जाएंगे और** (इसी तरह) **अगर तुम में के सौ आदमी होंगे तो हज़ार काफ़िरों पर कामयाब हो जाएंगे इस वजह से कि वो ऐसे लोग हैं जो** (दीन को) **कुछ नहीं समझते** (और इस वजह से कुफ़्र पर जमे हैं और इस वजह से उन को छुपी मदद नहीं पहुंचती और इस वजह से वो हार जाते हैं बस तुम पर ज़रूरी है कि अपने से दस गुना के मुक़ाबिले से भी न हटो)**(65) अब** (यानी जब सहाबा पर यह हुक्म भारी मालूम हुआ तो बदल दिया गया तो) **अल्लाह तआ़ला ने तुम पर कमी कर दी और जान लिया कि तुम में हिम्मत की कमी है, सो** (यह हुक्म दिया जाता है कि) **अगर तुम में के सौ आदमी** (मोर्चे पर) **जमे रहने वाले होंगे तो** (अपने से दो गुने यानी) **दो सौ पर कामयाब हो जाएंगे और** (इसी तरह) **अगर तुम में के हज़ार होंगे तो दो हज़ार पर अल्लाह के हुक्म से कामयाब हो जाएंगे, और**

अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों के साथ (हैं यानी जो दिल से मोर्चे पर जमे रहें उन की मदद करते) **हैं**(66)।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖۗ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٦٧ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَاۤ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝٦٨ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖؗ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٦٩

आयत न० 67 से 69

(ऐ मुसलमानो तुम ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो इन क़ैदियों से कुछ लेकर छोड़ देने की राय दी वो सही नहीं थी क्योंकि) **पैग़म्बर की यह शान नहीं कि कि उन के क़ैदी बाक़ी रहें** (बल्कि क़त्ल कर दिये जाएं) **जब तक कि वो ज़मीन में** (दुशमनों का) **ख़ून अच्छी तरह न बहा लें** (ताकि काफ़िरों की ताक़त टूट जाए और फ़साद की रोक थाम हो और जब फ़साद पर क़ाबू पाने की ताक़त आजाए फिर क़त्ल करना ज़रूरी नहीं), **तुम तो दुनिया का माल व सामान चाहते हो** (इसलिए फ़िदया लेने की राय दी) **और अल्लाह तआ़ला आख़रत** (की भलाई) **को चाहते हैं** (और वो इसमें है कि काफ़िरों का ज़ोर टूट जाए जिससे आज़ादी से इस्लाम का नूर व हिदायत फैले और लोग बेरोकटोक मुसलमान हों और दोज़ख़ से छुटकारा पाएं), **और अल्लाह तआ़ला बड़े ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाले) **बड़ी हिकमत वाले हैं** (जब चाहें तुम को मालदार करदें)(67) **अगर अल्लाह तआ़ला का एक हुक्म पहले न लिखा जा चुका होता** (कि इन क़ैदियों में लोग मुसलमान हो जाएंगे जिससे फ़साद का ख़तरा टल जाएगा) **तो जो बात तुम ने अपनाई है उस की वजह से कोई बड़ी सज़ा होती** (लेकिन चूंकि फ़साद न हुआ और तुम्हारी राय भी ठीक निकली इसलिए तुम सज़ा से बच गये और हम ने इस फ़िदये को जाइज़ कर दिया)(68) **सो जो कुछ तुम ने** (उन से फ़िदये में) **लिया है उस को हलाल पाक समझ कर खाओ और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो** (कि आगे हर तरह का ध्यान रक्खो) **बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े मुआ़फ़ करने वाले बड़ी रहमत वाले हैं** (कि तुम्हारा गुनाह भी मुआ़फ़ कर दिया और फ़िदया भी हलाल कर दिया)(69)।

नोटः- जंगे बद्र में मुसलमानों ने सत्तर लोगों को गरिफ़्तार कर लिया था उन के बारे में यह राय हुई कि इन को फ़िदया यानी जुर्माना लेकर छोड़ दिया जाए हो सकता है आगे चल कर इन में से कुछ लोग मुसलमान हो जाएं जैसा कि हुआ भी। हालांकि वही के वास्ते से यह बता दिया गया

था कि अगर इन को छोड़ा गया तो इस के बदले में अगले साल सत्तर सहाबा शहीद होंगे मगर फिर भी इस उम्मीद पर कि हो सकता है कि इनमें कुछ मुसलमान हो कर दोज़ख़ से बच जाएं सहाबा ने अपना शहीद हो जाना और उन को छोड़ देना पसन्द किया।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ
مِنْكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَ اِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ
مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

आयत न० 70 से 71

ऐ पैग़म्बर आप के क़ब्ज़े में जो क़ैदी हैं (उन में जो मुसलमान हो गये हैं) **आप उन से कह दीजिए कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दिल मे ईमान देखेंगे** (यानी तुम दिल से मुसलमान हुए होंगे) **तो जो कुछ तुम से** (फ़िदये में) **लिया गया है** (दुनिया में) **उससे अच्छा तुम को दे देंगे और** (आख़रत में) **तुम को मुआ़फ़ कर देंगे, और अल्लाह तआ़ला बड़े मुआ़फ़ करने वाले हैं** (इसलिए तुम को मुआ़फ़ कर देंगे और) **बड़ी रहमत वाले हैं** (इसलिए अच्छा बदला देंगे)(70) **और अगर** (मान लो) **ये लोग** (सच्चे दिल से मुसलमान न हुए बल्कि आप को धोका ही देना चाहें और दिल में) **आप के साथ धोका करने का** (यानी वादा तोड़ कर मुख़ालफ़त व मुक़ाबिला करने का) **इरादा रखते हों तो** (कुछ फ़िक्र न कीजिए अल्लाह तआ़ला उन को फिर आप के हाथों में गरिफ़्तार करा देंगे जैसा) **इससे पहले उन्होंने अल्लाह के साथ दग़ा बाज़ी की थी** (और आप की मुख़ालफ़त और मुक़ाबिला किया) **फिर अल्लाह ने उन को** (आप के हाथों में) **गरिफ़्तार करा दिया, और अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानने वाले हैं** (कि कौन धोकेबाज़ है और) **बड़ी हिकमत वाले हैं** (कि ऐसी सूरत पैदा कर देते हैं जिससे धोकेबाज़ हार जाए)(71)।

नोटः- जंगे बद्र के क़ैदी जिन को थोड़ा सा फ़िदया लेकर छोड़ दिया गया था मुसलमानों का बरताव, महरबानी और सुलूक देख कर उन में कुछ लोग मुसलमान हो गये थे उन की तसल्ली के लिए ये आयतें उतरीं कि फ़िदया देने का ग़म न करें।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ الَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّ نَصَرُوْۤا اُولٰٓئِكَ
بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ لَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَ اِنِ
اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ۝٧٢ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَ فَسَادٌ كَبِيْرٌ ۝٧٣ وَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ الَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّ نَصَرُوْۤا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ
مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٧٤ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَ اُولُوا الْاَرْحَامِ
بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٧٥

आयत न० 72 से 75

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत भी की और अपने माल और जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी किया (यानी मुहाजिर हज़रात) **और जिन लोगों ने इन** (मुहाजिरों) **को रहने की जगह दी और** (इन की) **मदद की** (यानी अन्सार हज़रात) **ये** (दोनो क़िस्म के) **लोग आपस में एक दूसरे के वारिस होंगे, और जो लोग ईमान तो लाए और हिजरत नहीं की तुम्हारा** (यानी मुहाजिरों का) **उन से मीरास का कोई वास्ता नहीं** (न ये उन के वारिस होंगे न वो इन के) **जब तक कि वो हिजरत न करें** (और जब हिजरत करलें फिर वो भी इसी हुक्म में दाख़िल हो जाएंगे), **और** (चाहे वो मीरास में हिस्सेदार न हों लेकिन) **अगर वो तुम से दीन के काम** (यानी काफ़िरों से जिहाद) **में मदद चाहें तो तुम्हारे ज़िम्मे** (उन की) **मदद करना वाजिब है मगर उस क़ौम के मुक़ाबिले में नहीं कि तुम में और उन में आपस में** (सुलह का) **वादा हो, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब कामों को देखते हैं** (बस उन की नाराज़ी के काम न करना)(72) **और** (इसी तरह) **जो लोग काफ़िर हैं वो आपस में एक दूसरे के वारिस हैं** (न तुम उन के वारिस न वो तुम्हारे वारिस), **अगर** (इन हुक्मों) **को न मानोगे** (यानी दीन अलग होते हुए सिर्फ़ रिश्तेदारी की वजह से वारिस बनाओगे) **तो दुनिया में बड़ा फ़ितना और बड़ा फ़साद** (फैलेगा क्योंकि जो हुक्म यहां बयान हुए वो इन्साफ़ और अमन सलामती के हैं इन को न माना गया तो दुनिया में फ़साद) **फैलेगा**(73) **और जो लोग** (पहले) **मुसलमान हुए और उन्होंने** (पैग़म्बर की हिजरत के ज़माने में) **हिजरत की और** (शुरू ही से) **अल्लाह की राह में जिहाद करते रहे और जिन लोगों ने इन**

(मुहाजिरो) **को अपने यहां ठहराया और इन की मदद की ये लोग** (तो) **ईमान का पूरा हक़ अदा करने वाले हैं** (कि ईमान लाने में पहल की), **उन के लिए** (आख़रत में) **बड़ी मुआफ़ी और** (जन्नत में) **बड़ी इ़ज़्ज़त की रोज़ी है(74) और जो लोग** (पैग़म्बर की हिजरत के) **बाद के ज़माने में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया** (यानी काम तो सब किये मगर बाद में) **सो ये लोग** (दर्जे में तुम्हारे बराबर नहीं लेकिन फिर भी) **तुम्हारे ही साथ शामिल हैं, और** (इन बाद वाले मुहाजिरों में) **जो लोग** (आपस में या पिछले मुहाजिरों के) **रिशतेदार हैं** (चाहे रूतबे में कम हों लेकिन वारिस होने में) **अल्लाह की किताब** (यानी शरीअ़त के हुक्म) **में एक दूसरे** (की मीरास) **के** (ग़ैर रिशतेदारों के मुक़ाबिले) **ज़्यादा हक़दार हैं** (चाहे ग़ैर रिशतेदार रूतबे में ज़्यादा हों), **बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को अच्छी तरह जानते** (हैं इसलिए हर वक़्त की भलाई के हिसाब से हुक्म दिये) **हैं(75)।**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि कोई काफ़िर किसी मुसलमान का और मुसलमान किसी काफ़िर का वारिस नहीं हो सकता चाहे वो आपस में रिशते से बाप और बेटे या भाई-भाई हों। दूसरे यह कि काफ़िर आपस में एक दूसरे के वली और वारिस हैं उन के क़ानूने विरासत में कोई दख़ल अन्दाज़ी मुसलमानों को नहीं चाहिए।

9-सूरत तौबा

इस मदनी सूरत में 16 रूकू और 129 आयतें हैं

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝۱ فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّ اعْلَمُوْۤا
اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ۝۲ وَ اَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ
الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ۬ وَ رَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ
غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ؕ وَ بَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝۳ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ
يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّ لَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْۤا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُتَّقِيْنَ ۝۴ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَ خُذُوْهُمْ وَ احْصُرُوْهُمْ وَ
اقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۵

आयत न० 01 से 05

अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से उन मुशरिकों (के समझौते) **से अलग होने का ऐलान है जिन से तुम ने** (सुलह का) **समझौता कर रक्खा था(01) सो** (उन को ख़बर कर दो कि) **तुम लोग इस** (अरब की) **ज़मीन में चार महीने** (आज़ादी से) **घूम लो** (इजाज़त है ताकि अपना ठिकाना तलाश कर लो) **और** (इस के साथ) **यह** (भी) **जान लो कि** (इस मुहलत की वजह से सिर्फ़ मुसलमानों की पकड़ से बच सकते हो लेकिन) **अल्लाह तआ़ला को मजबूर नहीं कर सकते** (कि उस के क़ब्ज़े से निकल सको) **और यह** (भी जान लो) **कि बेशक अल्लाह तआ़ला** (आख़रत में) **काफ़िरों को रूसवा करेंगे** (यानी सज़ा देंगे, इसमें तौबा करने को उकसाया जा रहा है)**(02) और अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से बड़े हज के दिनों में आम लोगों के सामने ऐलान किया जाता है कि अल्लाह और उसके रसूल दोनो** (कोई वक़्त तय किये बिना अभी) **साफ़ जवाब देते हैं उन मुशरिकों को** (अमन देने से जिन्होंने ख़ुद वादा तोड़ दिया, मगर) **फिर** (भी उन से कहा जाता है कि) **अगर तुम** (कुफ़्र से) **तौबा कर लो तो तुम्हारे लिए** (दोनो जहान में) **अच्छा है** (दुनिया में तो वादा तोड़ना मुआ़फ़ हो जाएगा और सज़ा से बच जाओगे और आख़रत में बख़्शिश हो जाएगी) **और अगर तुम ने** (इस्लाम से) **मुंह मोड़ा तो यह समझ लो कि तुम अल्लाह को**

मजबूर नहीं कर सकोगे (कि कहीं निकल कर भाग जाओ), **और इन काफ़िरों को एक दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए** (जो आख़रत में होगी)(03) **हां मगर वो मुशरिक लोग** (इस ऐलान से) **अलग हैं जिन से तुम ने समझौता किया फिर उन्होंने** (समझौता पूरा करने में) **तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबिले में** (तुम्हारे) **किसी** (दुशमन) **की मदद की सो उन के साथ किये समझौते को उन के** (तय किये) **वक़्त तक पूरा कर दो,** (और वादा न तोड़ो क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआ़ला** (वादा तोड़ने से) **परहेज़ करने वालों को पसन्द करते हैं(04) बस जब हुरमत के महीने बीत जाएं** (जिनमें जंग करना मना था) **तो** (उस वक़्त) **उन मुशरिकों को** (जिन्होंने सुलह का वादा तोड़ कर तुम्हारे साथ धोका किया था उन को) **जहां पाओ मारो पकड़ो बान्धो और** (उन्हें पकड़ने के लिए) **दाव-घात की जगह उन की ताक में बैठो** (यानी लड़ाई में जो जो होता है सब की इजाज़त है), **फिर अगर** (वो कुफ़्र से) **तौबा कर लें और** (इस्लाम के काम करने लगें यानी जैसे) **नमाज़ पढ़ने लगें ज़कात देने लगें तो उन का रास्ता छोड़ दो,** (यानी क़ैद व क़त्ल मत करो क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े मुआ़फ़ करने वाले बड़ी रहमत वाले हैं**(04)।

नोटः- सूरत तौबा से पहले दूसरी सूरतों की तरह बिस्मिल्लाह नहीं लिखी गई है उस की वजह यह बताई गई है कि कुछ सहाबा के नज़दीक सूरत तौबा सूरत अनफ़ाल का ही हिस्सा है अलग सूरत नहीं इसलिए सूरत के शुरू में बिस्मिल्लाह नहीं लिखी गई लेकिन इस अहतियात पर कि हो सकता है अलग सूरत हो उस का नाम अलग से लिख दिया गया।

मसअलाः-(1) सूरत तौबा के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना नाजाइज़ नहीं है जैसा कि न लिखे जाने की वजह से कुछ लोगों को शुबह हो गया है।

मसअलाः-(2) सूरत अनफ़ाल के बाद अगर लगातारा सूरत तौबा पढ़े तो बिस्मिल्लाह पढ़ने की ज़रूरत नहीं अलबत्ता अगर सूरत तौबा से ही पढ़ना शुरू करे तो बिस्मिल्लाह पढ़ना चाहिए ऐसे ही अगर सूरत के बीच में से पढ़े तो भी बिस्मिल्लाह पढ़ना चाहिए। कुछ लोग सूरत तौबा से पहले ''अऊ़ज़ुबिलल्लाहि मिन्नार पढ़ते हैं जिस का कोई सुबूत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम से नहीं है।

وَ اِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا
يَعْلَمُوْنَ ﴿۶﴾ كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَ عِنْدَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۷﴾ كَيْفَ وَ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا
يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّ لَا ذِمَّةً ؕ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ تَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَ اَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۸﴾ اِشْتَرَوْا
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۹﴾ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّ لَا
ذِمَّةً ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ﴿۱۰﴾ فَاِنْ تَابُوْا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ وَ نُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۱۱﴾

आयत न० 06 से 11

और अगर कोई आदमी मुशरिकों में से (सुलह की मुद्दत ख़त्म हो जाने के बाद इस्लाम की सच्चाई की तलाश में आप के पास आकर) **आप से पनाह चाहता हो** (ताकि तसल्ली से सुन सके और समझ सके) **तो** (ऐसी हालत में) **आप उस को पनाह दीजिए ताकि वो अल्लाह का कलाम** (और दीन की बातें) **सुन ले फिर** (उसके बाद) **उस को उस की अमन की जगह में पहुंचा दीजिए** (यानी पहुंचने दीजिए ताकि वो सोच समझ कर अपनी राय बना ले), **यह हुक्म** (इतनी पनाह देने का) **इस वजह से** (दिया जाता) **है कि वो ऐसे लोग हैं कि पूरी ख़बर नहीं रखते** (इसलिए इतनी मोहलत देना ज़रूरी है)**(06) इन** (क़ुरैश के) **मुशरिकों का** (सुलह का) **वादा अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक कैसे** (ऐतबार का) **रहेगा** (यानी ये लोग वादे को तोड़ देंगे) **मगर जिन लोगों से तुम ने ख़ाना काबा के पास समझौता किया है** (यानी दूसरा गिरोह उन से उम्मीद है कि ये वादे पर जमे रहें), **सो जब तक ये लोग तुम से सीधी तरह रहें** (यानी वादा न तोड़ें) **तुम भी उन से सीधी तरह रहो** (और उन से सुलह का वक़्त पूरा कर दो), **बेशक अल्लाह तआ़ला** (वादा तोड़ने से) **परहेज़ रखने वालों को पसन्द करते हैं(07) कैसे** (वो लोग वादे पर जमे रहेंगे) **जबकि उन की यह हालत है कि अगर वो तुम पर काबू पाजाएं तो तुम्हारे बारे में न किसी रिश्तेदारी का ध्यान रक्खें और न किसी समझौते का** (क्योंकि उन का यह समझौता मजबूरी और जंग के डर से है दिल से नहीं, बस) **ये लोग तुम को** (सिर्फ़) **अपनी ज़बानी बातों से राज़ी कर रहे हैं और उन के दिल** (इन बातों को) **नहीं मानते** (बस जब दिल से वादा पूरा करने का इरादा नहीं तो क्या पूरा होगा) **और उनमें ज़्यादा आदमी शरारती** (और धोकेबाज़ है कि वादों को पूरा

करना नहीं चाहते) **हैं(08) उन्होंने अल्लाह के हुक्मों के बदले** (दुनिया की) **थोड़ी क़ीमत लेलेना पसन्द कर लिया है** (जैसे कि काफ़िरों की हालत होती है कि दीन के मुक़ाबिले दुनिया चाहते हैं) **इसलिए ये लोग अल्लाह के** (सीधे) **रास्ते से** (जिसमें वादा पूरा करना भी दाख़िल है) **हटे हुए हैं,** (और) **बेशक यह उन का काम बहुत ही बुरा है(09) ये लोग किसी मुसलमान के बारे में** (भी) **न रिश्तेदारी का ध्यान रक्खें न वादे का, और ये लोग** (ख़ास कर इस बारे में) **बहुत ही ज़्यादती कर रहे हैं(10) सो** (फिर भी) **अगर ये लोग** (कुफ़्र से) **तौबा कर लें** (यानी मुसलमान हो जाएं) **और** (दीन के काम भी करने लगें यानी) **नमाज़ पढ़ने लगें और ज़कात देने लगें तो** (इस्लाम लाने से) **वो तुम्हारे दीनी भाई हो जाएंगे** (और पिछला किया हुआ सब मुआ़फ़ हो जाएगा), **और हम समझदार लोगों** (को बताने) **के लिए हुक्मों को साफ़-साफ़ बयान करते हैं(11)।**

नोटः- यहां बता दिया गया कि कोई कैसा ही दुशमन हो और कितनी ही तकलीफ़ उस ने पहुंचाई हो जब वो मुसलमान हो गया तो जिस तरह अल्लाह तआ़ला उस के सब पिछले गुनाहों को मुआ़फ़ कर देते हैं मुसलमानों के लिए भी ज़रूरी है कि पिछली सब बातों को दिल से भुला दें और आज से उन को अपना दीनी भाई समझें और भाई होने का हक़ अदा करें।

وَ اِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَ طَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ
لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ﴿١٢﴾ اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ وَ هَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَ هُمْ بَدَءُوْكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾ قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ
بِاَيْدِيْكُمْ وَ يُخْزِهِمْ وَ يَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَ يَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤﴾ ۙ وَ يُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَ يَتُوْبُ
اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٥﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَ لَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَ
لَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ لَا رَسُوْلِهٖ وَ لَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ؕ وَ اللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ ع

आयत न० 12 से 16

और अगर वो लोग समझौता करने के बाद अपनी क़समों (वादो) **को तोड़ डालें और** (बाद में भी ईमान न लाएं बल्कि कुफ़्र पर जमे रहें जिस का एक असर यह है कि) **तुम्हारे दीन** (इस्लाम) **पर ताना कशी** (और ऐतराज़) **करें तो** (इस हालत में) **तुम लोग इस इरादे से कि ये** (अपने कुफ़्र से) **बाज़ आजाएं इन कुफ़्र के सरदारों से** (ख़ूब) **लड़ो** (क्योंकि इस सूरत में) **उन**

(समझोतों) **की क़समें** (बाक़ी) **नहीं रहीं(12) तुम ऐसे लोगों से क्यों नहीं लड़ते जिन्होंने अपनी क़समों को तोड़ दिया** (और तुम्हारे दोस्तों के मुक़ाबिले तुम्हारे दुशमनों की मदद की) **और रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को वतन से निकालने का इरादा किया और उन्होंने तुम से ख़ुद पहले छेड़ निकाली** (जब कि तुम्हारी तरफ़ से वादा निभाने में कोई कमी नहीं हुई बस ऐसे लोगों से क्यों न लड़ो), **क्या उन से** (लड़ने में इसलिए) **डरते हो** (कि वो गिनती में ज़्यादा हैं), **सो** (अगर यह बात है तो उन से बिल्कुल न डरो क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला इस बात का ज़्यादा हक़ रखते हैं कि तुम उन से डरो अगर तुम ईमान रखते हो(13)** (और अल्लाह से डरने का मतलब यह है कि उस का कहना मानो बस अल्लाह का हुक्म यह है कि) **उन से जंग करो अल्लाह तआ़ला** (का वादा है कि) **उन को तुम्हारे हाथों सज़ा देगा और उन को ज़लील** (व रूसवा) **करेगा और उन के मुक़ाबिले तुम्हारी मदद करके** (तुम्हें जीत देगा और बहुत से) **मुसलमानों के दिलों को ठन्डा करेगा(14) और उन** (मुसलमानों) **के दिलों की कुढ़न को दूर करेगा** (जो ख़ुद मुक़ाबिले की ताक़त नहीं रखते और उन की हरकतों को देख कर दिल ही दिल में घुटते हैं), **और अल्लाह** (उन ही काफ़िरों में से) **जिस की चाहेगा तौबा क़ुबूल करेगा** (यानी मुसलमान होने की तौफ़ीक़ दे देगा जैसा कि बाद में ऐसा ही हुआ) **और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले बड़ी हिकमत वाले** (हैं कि इल्म से हर एक का अन्जाम कि इस्लाम है या कुफ़्र जानते हैं इसलिए अपनी हिकमत से ठीक हुक्म देते) **हैं(15)** (और तुम में से कुछ लोग जो लड़ने से जी चुराते हो तो) **क्या तुम यह सोचते हो कि** (ख़ुद को मुसलमान कहने पर) **तुम यूं ही** (इसी हालत पर) **छोड़ दिये जाओगे जब कि अल्लाह तआ़ला ने** (आज़मा कर) **उन लोगों को तो देखा ही नहीं जिन्होंने तुम में से** (ऐसे मौक़े पर) **जिहाद किया हो और अल्लाह व रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को** (राज़दार) **दोस्त न बनाया हो** (और जिहाद में इस दोस्ती का इम्तिहान हो जाता है कि कौन अल्लाह को चाहता है और कौन यारो रिश्तेदारों को), **और अल्लाह तआ़ला को सब ख़बर है तुम्हारे कामों की** (बस जिहाद में चुस्ती या सुस्ती करोगे वैसा ही बदला पाओगे)(16)।

नोटः- इन आयतों में जिन बातों की पेशगी ख़बर दी गई है बाद में वो सब एक-एक करके उसी तरह पूरी हूईं जिस तरह क़ुरआन शरीफ़ ने ख़बर दी थी इसलिए ये आयतें बहुत से मोजिज़ों से भरी हुई हैं।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚۖ وَ فِى
النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝١٧ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى الزَّكٰوةَ وَ لَمْ
يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰۤى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۝١٨

आयत न० 17 से 18

मुशरिकों का यह काम नहीं कि वो अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें (जिनमें मस्जिदे ख़ाना काबा भी आ गई) **जब कि वो ख़ुद अपने कुफ़्र के गवाह बने हुए** (हैं क्योंकि अपनी कुफ़्र की बातों का इक़रार करते) **हैं, उन लोगों के** (अच्छे) **काम** (जैसे मस्जिद बनाना सब) **बर्बाद हो गये** (कि ईमान न होने की वजह से कोई सवाब न मिलेगा) **और दोज़ख़ में वो लोग सदा रहेंगे। हां अल्लाह की मस्जिदों को आबाद** (और उनकी देख भाल) **करना उन लोगों का काम है जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर** (दिल से) **ईमान लाएं और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और** (अल्लाह पर ऐसा भरोसा रखते हों कि) **सिवाए अल्लाह के किसी से न डरें सो ऐसे लोगों के बारे मे उम्मीद** (यानी वादा) **है कि वो** (जन्नत का) **रास्ता पा जाएंगे**(18)।

नोटः- यहां मालूम हुआ कि किसी ग़ैर मुस्लिम को मस्जिद का मुतवल्ली या ज़िम्मेदार बनाना जाइज़ नहीं बल्कि मुसलमानों में भी दीनदार आदमी को मुतवल्ली बनाना चाहिए।

मसअलाः-अगर कोई ग़ैर मुस्लिम सवाब समझ कर मस्जिद के लिए चन्दा दे या मस्जिद बना दे तो उस का क़ुबूल कर लेना भी इस शर्त से जाइज़ है कि उससे दीनी या दुनियावी नुक़सान का या आगे चल कर उस पर क़ब्ज़ा कर लेने का या अहसान जिताने का या इल्ज़ाम का ख़तरा न हो वर्ना क़ुबूल करना सही नहीं।

اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَ عِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ جٰهَدَ فِىْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ؕ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٩ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝٢٠ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ
بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَ رِضْوَانٍ وَّ جَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۝٢١ ۙ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ
عَظِيْمٌ ۝٢٢ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰبَآءَكُمْ وَ اِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ

وَ مَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٢٣ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ وَ اِخْوَانُكُمْ وَ
اَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِيْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ ِۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَ تِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ
اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ جِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْفٰسِقِيْنَ ۝٢٤

आयत न० 19 से 24

नोटः- बहुत से मक्का के मुशरिक हाजियो के पानी पिलाने और ख़ाना काबा की देख भाल करने को सबसे बड़ा नेक काम समझते थे इस पर ये आयतें उतरीः-

क्या तुम लोगों ने हाजियों के पानी पिलाने को और ख़ाना काबा के आबाद रखने (और देख भाल करने) **को उस आदमी** (के नेक कामों) **के बराबर ठहरा लिया जो कि अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाया हो और उसने अल्लाह की राह में जिहाद किया हो, ये लोग बराबर नहीं हो सकते अल्लाह के नज़दीक** (यानी ईमान और जिहाद का दर्जा हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदों की देख भाल से ऊंचा है), **और अल्लाह तआ़ला बेइन्साफ़** (यानी मुशरिक) **लोगों को समझ नहीं देता** (इसलिए वो नहीं मानते क्योंकि गुनाह के कामों से इन्सान की अक़्ल भी ख़राब हो जाती है)(19) **जो लोग ईमान लाए और** (अल्लाह के वास्ते) **उन्होंने वतन छोड़ा और अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद किया वो दर्जे में अल्लाह के नज़दीक** (पानी पिलाने और मस्जिद आबाद करने वालों के मुक़ाबिले) **बहुत बड़े हैं, और ये ही लोग पूरे कामयाब हैं**(20) **उन का रब उन को ख़ुशख़बरी देता है अपनी तरफ़ से बड़ी रहमत और बड़ी रज़ामन्दी की और उन के लिए** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों की कि उन** (बाग़ों) **में सदा की नेमतें** (होंगी यानी वो नेमतें कभी ख़त्म न) **होंगी**(21) (और) **उनमें ये सदा-सदा को रहेंगे, बेशक अल्लाह के पास बड़ा बदला है** (उसमें से उन को दिया जाएगा)(22) **ऐ ईमान वालो अपने बापों को और अपने भाइयों को** (अपना) **दोस्त मत बनाओ अगर वो लोग कुफ़्र को ईमान के मुक़ाबिले** (ऐसा) **पसन्द करें** (कि उन के ईमान लाने की उम्मीद न रहे), **और जो आदमी तुम में से उन के साथ दोस्ती रक्खेगा सो ऐसे लोग बड़े गुनाहगार** (हैं मतलब यह कि दीन के लिए घर छोड़ने में बड़ी रूकावट इन लोगों से ताल्लुक़ है और ख़ुद वोही जाइज़ नहीं फिर हिजरत में क्या मुश्किल) **है**(23) (ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप** (इन से) **कह दीजिए कि अगर तुम्हारे**

बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारा ख़ानदान और वो माल जो तुम ने कमाए हैं और वो कारोबार जिस के बन्द हो जाने का तुम को डर हो और वो घर जिस (में रहने) **को तुम पसन्द करते हो** (अगर ये चीज़ें) **तुम को अल्लाह से और उस के रसूल से और उस की राह में जिहाद करने से ज़्यादा प्यारी हों तो तुम इन्तिज़ार करो यहां तक कि अल्लाह तआला अपना हुक्म** (हिजरत न करने की सज़ा का) **भेज दें, और अल्लाह तआला कहना न मानने वाले लोगों को** (कामयाबी का) **रास्ता नहीं दिखाते** (यानी वो इन चीज़ों से फ़ाइदा नहीं उठा पाते)**(24)**।

नोटः- यह आयत असल में उन लोगों के बारे में उतरी जिन्होंने मक्के से हिजरत फर्ज़ होने के वक़्त हिजरत नहीं की। मां बाप भाई बहन, औलाद व बीवी और माल व जायदाद की मुहब्बत ने उन को हिजरत का फ़र्ज़ अदा करने से रोक दिया। और जो लोग हिजरत से हिम्मत हार बैठेंगे वो जिहाद कैसे करेंगे।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّ يَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّ
ضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۚ﴿۲۵﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَ عَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۶﴾ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ
بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَ اِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ﴿۲۸﴾

आयत न० 25 से 28

अल्लाह तआला ने (लड़ाई के) **बहुत से मौक़ों में तुम्हारी मदद की है** (जैसे जंगे बद्र) **और** (ख़ास कर) **हुनैन** (की जंग) **के दिन भी कि अपनी गिनती ज़्यादा होने पर तुम को घमन्ड हो गया था फिर वो ज़्यादा होना तुम्हारे कुछ काम न आया और** (काफ़िरों के हमले से ऐसी परीशानी हुई कि) **तुम पर ज़मीन अपने** (इस) **फैलाव के बावजूद तंग लगने लगी फिर** (आख़िर) **तुम पीठ दिखा कर भाग लिए(25) इस के बाद अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर** (के दिल) **पर और दूसरे मोमिनों** (के दिल) **पर अपनी** (तरफ़ से) **तसल्ली भेजी और** (मदद के लिए) **ऐसी**

फ़ौजें (आसमान से) **उतारीं जिन को तुम ने नहीं देखा** (यानी फ़रिशते, जिस के बाद तुम फिर जंग के लिए तैयार हो गये और जीत गये), **और** (अल्लाह तआ़ला ने) **काफ़िरों को सज़ा दी** (कि वो हारे और क़त्ल व गरिफ़्तार हुए), **और यह काफ़िरों की** (दुनिया में) **सज़ा है**(26) **फिर अल्लाह तआ़ला** (इन काफ़िरों में से) **जिस को चाहें तौबा नसीब कर दें** (जैसा कि बाद में बहुत से मुसलमान हो गये), **और अल्लाह तआ़ला बड़े मुआ़फ़ करने वाले बड़ी रहमत वाले हैं** (कि जो आदमी उन में मुसलमान हुआ उस के सब पिछले गुनाह मुआ़फ़ करके जन्नत का हक़दार बना दिया)(27) **ऐ ईमान वालो मुशरिक लोग** (अक़ीदों की ख़राबी की वजह से) **नापाक हैं** (इस नापाकी की वजह से हुक्म दिया जाता है कि) **ये लोग इस साल के बाद ख़ाना काबा के पास** (भी) **न आने पाएं** (यानी हरम के अन्दर दाख़िल न हों), **और अगर तुम को** (इस हुक्म के जारी करने से) **ग़रीबी का डर हो** (कि लेन देन इन्हीं से ज़्यादा है जब ये न रहेंगे तो कारोबार का काम कैसे चलेगा) **तो** (तुम अल्लाह पर भरोसा रक्खो) **अल्लाह तआ़ला तुम को अपनी महरबानी से अगर चाहेंगे** (उन का) **मुहताज न रक्खेंगे, बेशक अल्लाह तआ़ला** (हुक्मों की भलाइयों को) **ख़ूब जानने वाले** (और उन को पूरा करने में) **बड़े हिकमत वाले हैं** (इसलिए यह हुक्म दिया और तुम्हारे रोज़गार का सामान भी कर देंगे)(28)।

नोटः- अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को इबादत का हक़दार समझना दिल की नापाकी है दूसरे वो लोग गुस्ल को ज़रूरी नहीं समझते।

قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُولُهٗ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ
الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ اُوتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُونَ ۝٢٩ وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ
وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ ؕ
قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُونَ ۝٣٠

आयत न० 29 से 30

किताब वाले जो कि न अल्लाह पर (पूरा-पूरा) **ईमान रखते हैं और न क़ियामत के दिन पर** (पूरा ईमान रखते हैं) **और न उन चीज़ों को हराम समझते हैं जिन को अल्लाह तआ़ला ने और उस के रसूल** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **ने हराम बताया है और न सच्चे दीन** (इस्लाम) **को अपनाते हैं उन से यहां तक लड़ो कि वो दब कर और ताबेदार बन कर जज़िया**

(टेक्स) **अदा करने लगें**(29) **और यहूदियों** (में से कुछ) **ने कहा कि** (अल्लाह की पनाह) **उज़ैज़** (अलैहिस्सलाम) **अल्लाह के बेटे हैं और ईसाइयों** (में से बहुत से लोगों) **ने कहा कि मसीह** (अलैहिस्सलाम) **अल्लाह के बेटे हैं, ये सब उनके मुंह की बनाई हुई बातें हैं** (जिस का असलीयत में कहीं नाम व निशान नहीं), **ये भी उन लोगों की सी बातें करने लगे जो इन से पहले काफ़िर हो चुके** (हैं यानी अरब के मुशरिक जो फ़रिशतों को ख़ुदा की बेटियां कहते थे मतलब यह कि उन को तो ये भी काफ़िर समझते हैं फिर उन्हीं की सी कुफ़्र की बात बकते) **हैं, अल्लाह की मार हो इन पर ये किधर उल्टे जा रहे** (हैं कि अल्लाह पर ऐसे झूट बान्धते) **हैं**(30)।

नोटः- जज़िया (टेक्स) उन ग़ैर मुस्लिमों से लिया जाता है जिन के मुल्क को मुसलमानों ने जीता फिर वहां के रहने वालों की ज़मीन जायदाद मालो दौलत को उन्हीं के पास रहने दिया और वो हुकूमत के ताबेदार बन कर रहने पर राज़ी हो गये तो उन से उन की हैसियत के हिसाब से बहुत मामूली रक़म ली जाती है और उस के बदले में उन की हिफ़ाज़त की जाती है और शहरी सहूलतें दी जाती हैं लेकिन जो बहुत ग़रीब हैं या अपाहज हैं उन से कुछ नहीं लिया जाता इसी तरह औरतों, बच्चों, बूढ़ों और दुनिया छोड़ इबादत में लगे रहने वाले फ़क़ीरों और सन्तों से भी कुछ नहीं लिया जाता। और मुसलमानों से वसूल किये जाने वाले माल (टेक्स) उश्र और ज़कात कहलाते हैं।

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَ رُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَ مَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا
وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۳۱﴾ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ يَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ
يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَ لَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۳۲﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَ
لَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَ الرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَ الْفِضَّةَ وَ لَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۴﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَ جُنُوْبُهُمْ وَ
ظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾

आयत न० 31 से 35

उन्होंने (यानी यहूदियों व ईसाइयों ने) **अल्लाह** (की तौहीद) **को छोड़ कर अपने आ़लिमों**

और पीरों को (ताबेदारी में) **अपना ख़ुदा बना लिया है** (कि अल्लाह के हुक्म के बजाए उन का कहना मानते हैं और ऐसी ताबेदारी इबादत है बस इस हिसाब से वो उन की इबादत करते हैं) **और मसीह बिन मरयम** (अलैहिस्सलाम) **को भी** (ख़ुदा बना रक्खा है कि उन को अल्लाह का बेटा कहते हैं और ख़ुदा का बेटा ख़ुदा होगा) **हालांकि उन को** (अल्लाह की किताबों में) **सिर्फ़ यह हुक्म किया गया है कि बस एक** (सच्चे) **ख़ुदा की इबादत करें, जिस के सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, वो इन के शिर्क से पाक है(31) वो लोग चाहते हैं कि अल्लाह के नूर** (यानी दीन इस्लाम) **को अपने मुंह से** (फूंक मार-मार कर) **बुझा दें** (यानी दीन पर ऐतराज़ की बातें करते हैं) **हालांकि अल्लाह तआ़ला अपने** (इस) **नूर को पूरा किये बिना मानेगा नहीं और चाहे काफ़िरों को ये बात कितनी ही बुरी लगे(32) वो अल्लाह ऐसा है कि** (इसी नूर को पूरा करने के लिए) **उस ने अपने रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को हिदायत** (का सामान यानी क़ुरआन) **और सच्चा दीन** (यानी इस्लाम) **देकर** (दुनिया में) **भेजा है ताकि इस** (दीन) **को सभी** (दूसरे) **दीनों पर हावी कर दे** (कि दीन इस्लाम छा जाए) **चाहे मुशरिक कैसा ही बुरा मानें(33) ऐ ईमन वालो बहुत से अहबार** (यानी यहूदियों के आ़लिम) **और राहिब** (यानी ईसाइयों के पीर) **आम लोगों के माल नाहक़ तरीक़े से खाते** (उड़ाते) **हैं** (यानी शरीअ़त के हुक्मो को छुपा कर लोगों की मनमर्ज़ी के फ़तवे देकर उनसे तोहफ़े लेते हैं) **और** (इस की वजह से वो) **अल्लाह की राह** (यानी दीन इस्लाम) **से** (लोगों को) **रोकते** (हैं क्योंकि इन के झूटे फ़तवों में आकर लोग गुमरही में फंसते रहते) **हैं, और** (लालच में माल भी जमा करते हैं जिस के बारे में है कि) **जो लोग सोना चान्दी जमा कर कर के रखते हैं और उस को अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते** (यानी ज़कात नहीं निकालते) **उन को एक बड़ी दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए(34)** (जो उस दिन होगी) **जिस दिन उस** (माल) **को दोज़ख़ की आग में** (पहले) **तपाया जाएगा फिर उस से उन लोगों के चेहरों और उन की करवटों और उन की पीठों को दाग़ दिया जाएगा,** (और यह जिताया जाएगा कि) **यह वो** (माल) **है जिस को तुम ने अपने वास्ते जमा कर-कर के रक्खा था सो अब अपने जमा करने का मज़ा चक्खो(35)।**

नोटः- एक हदीस में है कि जिस माल की ज़कात अदा कर दी जाए वो कनज़तुम (जोड़-जोड़ कर रखने) में दाख़िल नहीं। (अबुदाउद)

यानी ज़कात निकालने के बाद बाक़ी जमा रखना जाइज़ है।

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ یَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَاۤ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ
ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ ۙ۬ فَلَا تَظْلِمُوْا فِیْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَ قَاتِلُوا الْمُشْرِكِیْنَ كَآفَّةً كَمَا یُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَ
اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِیْنَ ۝۳۶ اِنَّمَا النَّسِیْٓءُ زِیَادَةٌ فِی الْكُفْرِ یُضَلُّ بِهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا یُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّ
یُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّیُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَیُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُیِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا
یَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِیْنَ ۝۳۷ ع

आयत न० 36 से 37

बेशक महीनों की गिनती अल्लाह की किताब (यानी शरीअ़त के हुक्मों) **में अल्लाह के नज़दीक बारह महीने** (चान्द के हिसाब से) **हैं** (और कुछ आज से नहीं बल्कि) **जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने आसमान और ज़मीन पैदा किये थे** (उसी दिन से और) **उन में चार महीने अदब के हैं** (ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम और रजब)**, ये ही सीधा दीन है** (यानी इन महीनों का बारह होना और चार ख़ास अदब के महीने होना और इन का घटाना बढ़ाना बेदीनी है) **सो तुम इन महीनों के बारे में** (दीन के ख़िलाफ़ करके जो कि गुनाह की बात है) **अपना नुक़सान मत करना और इन मुशरिकों से** (जब कि ये अपनी कुफ़्र की बातों को न छोड़ें) **सब से लड़ना जैसा कि वो तुम सब** (मुसलमानों) **से लड़**(ने को हर वक़्त तैयार रहा कर)**ते हैं, और** (अगर उन की गिनती और सामान से डर हो तो) **यह जान रक्खो कि अल्लाह तआ़ला परहेज़गार** (और नेक) **लोगों का साथी है** (बस ईमान और परहेज़गारी पर जमे रहो और किसी से मत डरो)(36) **यह** (महीनों का या उन के अदब का आगे को) **हटा देना कुफ़्र को और बढ़ा देता है जिससे** (और आम) **काफ़िर गुमराह किये जाते हैं** (इस तरह) **कि वो इस महीने को किसी साल** (अपने मतलब के लिए) **हलाल कर लेते हैं और किसी साल** (जब कोई मतलब न हो) **हराम समझते हैं ताकि अल्लाह तआ़ला ने जो महीने हराम किये हैं** (सिर्फ़) **उन की गिनती** (ख़ास उन्हीं महीनों का ध्यान रक्खे बिना) **पूरी कर लेते हैं फिर** (जब ख़ास वो ही महीने न रहे तो) **अल्लाह के हराम किये हुए महीने को हलाल कर लेते हैं, उन के बुरे काम उन को अच्छे लगते हैं,** (और उन के कुफ़्र पर जमे रहने पर ग़म करना बेकार है क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला ऐसे काफ़िरों को हिदायत नहीं देता** (क्योंकि ये ख़ुद राह पर आना नहीं चाहते)(37)।

नोटः- पहले पैग़म्बरों की शरीअ़त में साल में ख़ास चार महीने अदब व अहतराम के थे जिन में इबादत

करना ज़्यादा सवाब बताया गया और इनमें लड़ाई झगड़ा मना किया गया मगर लोगों ने इसमें गड़बड़ी की जब इन महीनों में लड़ाई की नौबत आ जाती तो इन को अपने हिसाब से घटा बढ़ा लेते थे।

यहां यह भी मालूम हुआ कि इस्लाम में महीनों की जो तरतीब और नाम रक्खे गये हैं वो इन्सानों के बनाए हुए नहीं बल्कि अल्लाह के बनाए हुए हैं। दूसरे यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह के नज़दीक शरीअ़त के हुक्मों रोज़ा हज व ज़कात वग़ैरह में चान्द के हिसाब का ऐतबार है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ط اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ج فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝٣٨ اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّ
يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْئًا ط وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٣٩ اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ
اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ج فَاَنْزَلَ اللّٰهُ
سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ط وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ط وَ
اللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٤٠ اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٤١ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ط وَ
سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ج يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ج وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝٤٢ ع

आयत न० 38 से 42

नोटः- तबूक वालों ने मदीने पर हमले का इरादा किया तो उस को रोकने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को जंग के लिए तैयार किया इन आयतों में उसी का बयान है कि सख़्त गर्मी के मौसम में तैयार फ़सलों को छोड़ कर कि जिन पर साल भर के गुज़ारे का दारोमदार था जंग के लिए जाना बड़ा इम्तिहान था जिसमें सच्चे मुसलमान पूरे उतरेः-

ऐ ईमान वालो तुम लोगों को क्या हुआ कि जब तुम से कहा जाता है कि अल्लाह की राह में (यानी जिहाद के लिए) **निकलो तो तुम ज़मीन को लगे जाते हो** (यानी उठते और चलते नहीं), **क्या तुम आख़रत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गये, तो** (याद रक्खो) **दुनिया**

की ज़िन्दगी का मज़ा तो (आख़रत के मुक़ाबिले) **कुछ भी नहीं मगर बहुत थोड़ा है**(38) **अगर तुम** (इस जिहाद के लिए) **न निकलोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम को सख़्त सज़ा देंगे** (यानी तुम को हलाक कर देंगे) **और तुम्हारे बदले दूसरी क़ौम पैदा कर देंगे** (और उन से अपना काम ले लेंगे) **और तुम अल्लाह** (के दीन) **को कुछ नुक़सान न पहुंचा सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है**(39) **अगर तुम लोग पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की मदद न करोगे तो** (अल्लाह आप की मदद करेगा जैसा कि) **अल्लाह तआ़ला आप की मदद उस वक़्त कर चुका है जब कि** (इससे ज़्यादा मुसीबत व परीशानी का वक़्त था जबकि) **आप को काफ़िरों ने** (तंग कर-कर के मक्के से) **निकाल दिया था जब कि दो आदमियों में से एक आप थे** (और दूसरे हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० आप के साथ थे) **जिस वक़्त कि दोनो** (साहिब) **ग़ार** (सौर नामी गुफ़ा) **में** (मौजूद) **थे जब कि आप अपने साथी से कह रहे थे कि तुम** (कुछ) **ग़म न करो बेशक अल्लाह तआ़ला** (की मदद) **हमारे साथ है, सो** (वो मदद यह हुई कि) **अल्लाह तआ़ला ने आप** (के दिल) **पर अपनी** (तरफ़ से) **तसल्ली उतारी और आप की** (फ़रिशतों की) **ऐसी फ़ौजों से मदद की जिन को तुम लोगों ने नहीं देखा और अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों की बात** (और चाल) **नीची कर दी** (कि वो नाकाम रहे), **और अल्लाह ही का बोल बाला रहा** (कि उन की कोशिश और हिफ़ाज़त कामयाब रही), **और अल्लाह ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **हिकमत वाला है**(40) (जिहाद के लिए) **निकल पड़ो** (चाहे) **थोड़े सामान से** (हो) **और** (चाहे) **ज़्यादा सामान से** (हो) **और अल्लाह ही की राह में अपने माल और जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है अगर तुम यक़ीन रखते हो** (तो देर मत करो)(41) **अगर कुछ** (दुनिया का सामान) **नज़दीक मिलने वाला होता और सफ़र भी हल्का होता तो ये** (मुनाफ़िक़) **लोग ज़रूर आप के साथ हो लेते लेकिन उन को तो दूरी ही लम्बी दिखाई देने लगी** (इसलिए यहां ही रह गये), **और अभी** (जब तुम लोग वापस आओगे तो) **अल्लाह की क़समें खा जाएंगे कि अगर हमारे बस की बात होती तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते ये लोग** (झूट बोल-बोल कर) **अपने आप को तबाह** (यानी अज़ाब के हक़दार) **कर रहे हैं, और अल्लाह जानता है कि ये लोग बेशक झूटे हैं** (बेशक वो जा सकते थे और फिर नहीं गये)(42)।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَ تَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٤٣ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ
يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝٤٤ اِنَّمَا
يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ ارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ۝٤٥ وَ لَوْ
اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّ لٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَ قِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝٤٦ لَوْ
خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّ لَاۡاَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَ فِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَ
اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٤٧ لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَ قَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَ ظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ
هُمْ كٰرِهُوْنَ ۝٤٨ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَ لَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ
بِالْكٰفِرِيْنَ ۝٤٩ اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَ اِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَاۤ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَ
يَتَوَلَّوْا وَّ هُمْ فَرِحُوْنَ ۝٥٠ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝٥١ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَاۤ اِلَّاۤ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ وَ نَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ
بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖۤ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْۤا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ۝٥٢

आयत न० 43 से 52

नोटः- जब मुनाफ़िक़ों ने अपनी मजबूरी सुना कर जिहाद के लिए न जाने की इजाज़त चाही तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इजाज़त देदी उसी का बयान हैः-

(ऐ पैग़म्बर) **अल्लाह तआ़ला ने आप को मुआ़फ** (तो) **कर दिया** (लेकिन) **आप ने उन को** (जिहाद में न जाने की ऐसी जल्दी) **इजाज़त क्यों देदी थी जब तक कि आप के सामने सच्चे लोग न खुल जाते और** (जब तक कि) **झूटों को न जान लेते** (ताकि वो ख़ुश तो न हो पाते कि हमने आप को धोका दे दिया)**(43) जो लोग अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं वो अपने माल और जान से जिहाद करने के बारे में** (उसमें शरीक न होने की कभी) **आप से इजाज़त न मागेंगे** (बल्कि वो हुक्म के साथ दौड़ पड़ेंगे)**, और अल्लाह तआ़ला इन परहेज़गारों को अच्छी तरह जानता है** (उन को बदला और सवाब देगा)**(44) लेकिन वो लोग** (जिहाद में न जाने की) **आप से इजाज़त मांगते हैं जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान नहीं रखते और उन के दिल** (इस्लाम से) **शक में पड़े हैं सो वो अपने शकों में पड़े हुए डांवा डोल**

हैं (कभी हिमायत का ध्यान होता है कभी मुख़ालफ़त का)(45) **और अगर वो लोग** (जंग में) **चलने का इरादा करते** (जैसा कि वो कहते हैं कि इरादा तो था मगर यह मजबूरी आ गई तो अगर इरादा होता) **तो उस** (चलने) **की कुछ तो तैयारी करते लेकिन** (उन्होंने तो शुरू से इरादा ही नहीं किया इस वजह से) **अल्लाह तआ़ला ने उन के जाने को पसन्द नहीं किया इसलिए उन को तौफ़ीक़ नहीं दी और यह कह दिया गया कि अपाहज लोगों के साथ तुम यहां ही बैठे रहो**(46) (और इनके जाने में भलाई न होने की वजह यह है कि) **अगर ये लोग तुम्हारे साथ मिल जाते तो इसके सिवा क्या होता कि और दूना फ़साद करते** (वो फ़साद यह होता कि) **तुम्हारे बीच फ़ितना फैलाने की कोशिश में दौड़े-दौड़े फिरते** (यानी लगाई बुझाई करके आपस में फूट डलवाते और झूटी ख़बरें उड़ा कर परीशान करते दुशमन का रौब तुम्हारे दिल में डालने की कोशिश करते इसलिए उन का न जाना ही अच्छा हुआ), **और** (अब भी) **तुम में उन के कुछ जासूस मौजूद हैं, और इन ज़ालिमों को अल्लाह ख़ूब समझ लेगा**(47) (और इन की साज़िशें कुछ आज नई नहीं) **इन्होंने तो पहले भी** (जैसे जंगे उहद में) **फ़ितना पैदा करने की कोशिश की थी** (कि साथ हो कर हट गये ताकि मुसलमान हिम्मत हार जाएं) **और** (इसके सिवा भी) **आप** (को नुक़सान पहुंचाने) **के लिए कार्रवाइयों की उलट फेर करते ही रहे यहां तक कि सच्चा वादा आ गया और** (उस का आना यह है कि) **अल्लाह का हुक्म हावी रहा और वो कुढ़ते ही रहे** (इसी तरह आगे भी बिल्कुल तसल्ली रखिए कुछ फ़िक्र न कीजिए)(48) **और इन** (घर रह जाने वाले मुनाफ़िक़ों) **में कोई आदमी वो है जो** (आप से) **कहता है कि मुझ को** (जंग में न जाने की और घर रहने की) **इजाज़त दे दीजिए और मुझ को ख़राबी में न डालिए** (मतलब यह कि तबूक की औरतें बहुत हसीन हैं उन को देखूंगा तो अपनी बुरी आदत की वजह से ख़राबी में पड़ जाउंगा), **ख़ूब समझ लो कि ये लोग ख़राबी में तो पड़ ही चुके हैं** (क्योंकि पैग़म्बर का कहना न मानना और कुफ़्र से बढ़ कर और कौन सी ख़राबी होगी), **और बेशक दोज़ख़** (आख़रत में) **इन काफ़िरों को घेरेगी**(49) **अगर आप को कोई भलाई मिल जाए तो उन्हें दुख होता है, और अगर आप पर कोई मुसीबत आ जाए तो** (ख़ुश हो कर) **कहते हैं कि हम ने तो** (इसीलिए) **पहले ही अपना बचाव कर लिया था** (कि उन के साथ लड़ाई में नहीं गये थे) **और** (यह कह कर) **वो ख़ुश होते हुए चले जाते हैं**(50) **आप** (जवाब में उन से दो बातें) **कह दीजिए** (एक तो यह कि) **हम पर कोई मुसीबत नहीं आसकती सिवाए उस के जो अल्लाह तआ़ला ने हमारे नसीब में लिख दी है, वो हमारा मालिक है** (बस सच्चा मालिक जो तय करे बन्दे को उस पर राज़ी रहना ज़रूरी है) **और** (हमारी ही क्या ख़ास बात

है) **अल्लाह ही पर सब मुसलमानों को भरोसा करना चाहिए(51)** (दूसरी बात यह) **कह दीजिए कि** (हमारे लिए जैसी अच्छी हालत बेहतर है वैसे ही मुसीबतें भी अन्जाम में अच्छी हैं कि इसमें दर्जे बढ़ते और गुनाह दूर होते हैं बस) **तुम तो हमारे बारे में दो भलाइयों में से एक भलाई के इन्तिज़ार में रहते हो, और हम तुम्हारे बारे में इस इन्तिज़ार में रहते हैं कि अल्लाह तआला तुम को कोई सज़ा दें** (चाहे) **अपनी तरफ़ से** (दुनिया में या आख़रत में) **या हमारे हाथों से** (जब कि तुम्हारा कुफ़्र खुल जाए और दूसरे ग़द्दारों की तरह सज़ा पाओ) **सो तुम** (अपनी जगह) **इन्तिज़ार करो** (और) **हम तुम्हारे साथ** (अपनी जगह) **इन्तिज़ार करें(52)।**

नोटः- यहां बता दिया गया कि तक़दीर और अल्लाह पर भरोसे का मतलब यह नहीं कि आदमी हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाए बल्कि होना यह चाहिए कि अपनी तरफ़ से भरपूर कोशिश करे और सामान जमा करने के बाद तक़दीर पर यक़ीन और अल्लाह पर भरोसा रक्खे कि हर काम का नतीजा उसी के हाथ में है।

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝٥٣ وَ مَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ
نَفَقٰتُهُمْ اِلَّاۤ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ بِرَسُوْلِهٖ وَ لَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَ هُمْ كُسَالٰى وَ لَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَ هُمْ
كٰرِهُوْنَ ۝٥٤ فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ
تَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٥٥ وَ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَ لٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ
يَّفْرَقُوْنَ ۝٥٦ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَ هُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝٥٧ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ
فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَ اِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَاۤ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝٥٨ وَ لَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ
اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ ۙ وَ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَ رَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝٥٩ اِنَّمَا
الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَ الْمَسٰكِيْنِ وَ الْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَ الْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَ فِي الرِّقَابِ وَ الْغٰرِمِيْنَ وَ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَ ابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٦٠

आयत न० 53 से 60

आप (इन मुनाफ़िक़ों से) **कह दीजिए कि तुम** (अल्लाह की राह में) **चाहे ख़ुशी से ख़र्च करो या नाख़ुशी से तुम से किसी तरह** (भी अल्लाह के यहां) **क़ुबूल नहीं किया जाएगा** (क्योंकि) **बेशक**

तुम नाफ़रामनी करने वाले लोग हो (नाफ़रमानी से मुराद कुफ़्र है जैसा कि आगे आता है)(53) **और उन की ख़ैरात क़ुबूल होने में इस के सिवा कोई रूकावट नहीं कि उन्होंने अल्लाह के साथ और उसके पैग़म्बर के साथ कुफ़्र किया** (और काफ़िर का कोई अ़मल क़ुबूल नहीं) **और** (इस छिपे कुफ़्र की निशानी यह है कि) **वो लोग नमाज़ नहीं पढ़ते मगर हारे जी से और** (नेक काम में) **ख़र्च नहीं करते मगर बुरे जी से** (क्योंकि दिल में ईमान तो नहीं जिससे सवाब की उम्मीद हो और शोक़ हो बस बदनामी से बचने के लिए ऐसा करते हैं)(54) **तुम्हें उन के माल और औलाद** (के ज़्यादा होने) **से अचम्भा नहीं होना चाहिए** (कि ऐसे मरदूद लोगों को इतनी नेमतें क्यों मिलीं क्योंकि असलीयत में ये उन के लिए नेमत नहीं एक तरह की सज़ा ही है, क्योंकि) **अल्लाह तो सिर्फ़ यह चाहता है कि उन चीज़ों की वजह से दुनिया की ज़िन्दगी में** (भी) **उन को सज़ा दे** (कि बस कमाने की धुन में हर घड़ी बेचैन रहें) **और उन की जान कुफ़्र ही की हालत में निकल जाए** (जिससे आख़रत में भी अज़ाब हो तो जिस माल और औलाद का यह अन्जाम हो उस को नेमत समझना ही ग़लती है)(55) **और ये** (मुनाफ़िक़) **लोग अल्लाह की क़समें खाते हैं कि वो तुम में से हैं** (यानी मुसलमान हैं)**, हालांकि** (असलीयत में) **वो तुम में से नहीं लेकिन** (बात यह है कि) **वो डरपोक लोग** (हैं यह सोच कर कि कभी हमारे साथ काफ़िरों का सा बरताव मुसलमानों की तरफ़ से होने लगे डर के मारे झूटी क़समें खाकर अपने कुफ़्र को छुपाते) **हैं**(56) (और किसी दूसरी जगह उन का ठिकाना नहीं जहां आज़ादी से जा रहें वर्ना) **उन लोगों को अगर कोई पनाह की जगह मिल जाती या** (कहीं पहाड़ जैसी जगह में) **गुफ़ा या कोई घुस बैठने की ज़रा सी जगह** (मिल जाती) **तो ये ज़रूर मुंह उठा कर उधर ही चल देते** (मगर यह सूरत ही नहीं इसलिए झूटी क़समें खाकर अपने आप को मुसलमान बताते हैं)(57) **और उनमें कुछ लोग वो हैं जो सदक़े** (ख़ैरात बान्टने) **के बारे में आप पर ऐतराज़ करते हैं** (कि इस बान्टने में नऊज़ुबिल्लाह इन्साफ़ नहीं किया गया) **तो अगर सदक़ों में से उन को** (उन की मर्ज़ी मुवाफ़िक़) **नहीं मिलता तो वो नाराज़ हो जाते** (हैं जिससे पता चला कि वो लालची और मतलबी) **हैं**(58) **और उन के लिए अच्छा होता अगर वो लोग इस पर राज़ी रहते जो कुछ उन को अल्लाह ने** (दिलवाया था) **और उसके रसूल ने दिया था और** (इसके बारे में) **यह कहते कि हम को अल्लाह** (का दिया) **काफ़ी है** (हम को इतना ही क़ाइदे से मिल सकता था इसी में भलाई व बरकत होगी और फिर अगर ज़रूरत होगी और भलाई होगी तो) **आगे भी अल्लाह तआ़ला अपनी महरबानी से हम को और देंगे और उस के पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **देंगे हम** (दिल से) **अल्लाह ही की तरफ़ लौ लगाए हुए** (हैं उसी से

सब उम्मीदें रखते) **हैं**(59) (और फ़र्ज़) **सदक़े** (और ज़कात) **तो सिर्फ़ हक़ है ग़रीबों का और मुहताजों का और जो काम करने वाले इन सदक़ों** (के वसूल करने) **पर तैनात हैं और उन** (नये मुसलमानों) **का जिन** (को दीन पर जमाए रखने के लिए उन) **की दिलजोई** (और तसल्ली) **करना** (ज़रूरी) **है और ग़ुलामों को आज़ाद कराने में** (ख़र्च किया जाए) **और क़र्ज़दारों के क़र्ज़े** (अदा करने) **में और जिहाद** (वालों के सामान) **में और मुसाफ़िरों** (की मदद) **में, यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से तय है, और अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले बड़ी हिकमत वाले हैं**(60)।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ
رَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۶۱﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ
لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۲﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿۶۳﴾ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ
سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿۶۴﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ
اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۶۵﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ
اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۶۶﴾ ع

आयत न० 61 से 66

और इन (मुनाफ़िक़ों) **में कुछ ऐसे हैं कि पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को तकलीफ़ पहुंचाते हैं** (यानी आप की शान में ऐसी बाते कहते हैं कि सुन कर आप को तकलीफ़ हो) **और** (जब कोई रोकता है तो) **कहते हैं कि आप हर बात कान लगा कर सुन लेते हैं** (आप को झूट बोल कर धोका देना आसान है इसलिए कुछ फ़िक्र नहीं)**, आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि** (तुम को ख़ुद धोका हुआ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो तुम्हारे झूट को जान लेने के बावजूद अपनी शराफ़त और महरबानी से तुम को झुटलाते और रूसवा नहीं करते) **वो** (पैग़म्बर) **कान लगा कर तो वो ही बात सुनते हैं जो तुम्हारे हक़ में भलाई** (ही भलाई) **है** (जिस का मतलब यह है) **कि वो अल्लाह** (की बातें वही से जान कर उन) **पर ईमान लाते हैं और** (सच्चे) **मोमिनों** (की बातों) **का यक़ीन करते हैं और** (तुम्हारी शरारत भरी बातें जो सुन लेते हैं तो उस की वजह यह है कि) **आप** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **उन लोगों के हाल पर महरबानी करते हैं जो तुम में मुसलमान**

(होना दिखाते) **हैं** (चाहे दिल में ईमान न हो), **और जो लोग अल्लाह के पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को तकलीफ़ पहुंचाते हैं उन लोगों को दर्दनाक सज़ा होगी(61)** (मुसलमानों) **ये लोग तुम्हारे सामने** (झूटी) **क़समें खाते हैं** (कि हमने वो बात नहीं कही या हम इस मजबूरी से जंग में न जा सके) **ताकि तुम को राज़ी कर लें** (जिस से उन के जान व माल बचे रहें), **जब कि अल्लाह और उस का पैग़म्बर ज़्यादा हक़ रखते हैं कि अगर ये लोग सच्चे मुसलमान हैं तो उस को राज़ी करें** (जिस के लिए ज़रूरी है कि सच्चाई और ईमान पर रहें)**(62) क्या उन को पता नहीं कि जो आदमी अल्लाह और उस के पैग़म्बर की मुख़ालफ़त करेगा** (जैसा ये लोग कर रहे हैं) **तो यह बात तय हो चुकी है कि ऐसे आदमी के लिए दोज़ख़ की आग होगी कि वो उसमें सदा रहेगा,** (और) **यह बड़ी रूसवाई की बात है(63) मुनाफ़िक़ लोग** (दिल में) **इस बात से डरते हैं कि मुसलमानों पर** (पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वही के वास्ते से) **कोई ऐसी सूरत** (या आयत) **न उतार दी जाए जो उन को उन मुनाफ़िक़ों के दिलों की बातें बता दे** (यानी उन्होंने जो हंसी उड़ाने की बातें छुप कर की हैं उन का पता चल जाए), **आप कह दीजिए कि अच्छा तुम मज़ाक़ उडाते रहो बेशक अल्लाह तआ़ला वो बात खोल कर रहेगा जिस** (के खुलने से) **तुम डरते** (थे बस खोल दिया गया कि तुम मज़ाक़ उड़ा रहे) **थे(64) और** (खुल जाने के बाद) **अगर आप उन से** (इस मज़ाक़ उड़ाने की वजह) **पूछें तो कह देंगे कि हम तो** (बस जी ख़ुश करने को) **वैसे ही हंसी दिल्लगी कर रहे थे** (मज़ाक़ उड़ाने का इरादा नहीं था), **आप** (उन से) **कह दीजिए कि क्या अल्लाह और उस की आयतों और उस के पैग़म्बर के साथ तुम हंसी करते** (थे यानी यह तो देखो कि तुम मज़ाक़ किस का उड़ा रहे) **थे(65) तुम अब बहाने मत बनाओ तुम तो अपने को मोमिन कह कर कुफ़्र करने लगे** (क्योंकि दीन के साथ दिल्लगी करना कुफ़्र है), **अगर तुम में से कुछ को छोड़ भी दें** (इस लिए कि वो तौबा करके मुसलमान हो गये) **तो हम कुछ को** (ज़रूर ही) **सज़ा देंगे इस वजह से कि वो मुजरिम** (थे यानी वो मुसलमान नहीं हुए) **थे(66)।**

नोटः- हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह तआ़ल ने सत्तर मुनाफ़िक़ों के नाम पूरे पते के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बता दिये मगर रहमतुल्लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन लोगों पर यह बात नहीं खोली। (मज़हरी)

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَ يَقْبِضُوْنَ
اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتِ وَ الْكُفَّارَ
نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾ كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
كَانُوْۤا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّ اَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّ اَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا
اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَ خُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَ
الْاٰخِرَةِ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۙ وَ قَوْمِ
اِبْرٰهِيْمَ وَ اَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَ الْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ يُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ
مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَ رِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾

आयत न० 67 से 72

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सब एक तरह के हैं, कि बुरी बात (यानी कुफ़्र और इस्लाम की मुख़ालफ़त) **सिखाते हैं और अच्छी बात** (यानी ईमान और पैग़म्बर की ताबेदारी) **से मना करते हैं और** (और अल्लाह की राह में ख़र्च करने से) **अपने हाथों को बन्द रखते हैं, उन्होंने अल्लाह** (के हुक्मों) **का ध्यान न रक्खा बस अल्लाह ने उन का ध्यान न रक्खा** (यानी उन पर ख़ास रहमत न की)**, बेशक ये मुनाफ़िक़ बड़े ही नाफ़रमान हैं(67) अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ मर्दों व मुनाफ़िक़ औ़रतों और** (खुला) **कुफ़्र करने वालों से दोज़ख़ की आग का वादा कर रक्खा है जिसमें वो सदा रहेंगे, वो** (सज़ा) **ही उन को रास आएगी, और अल्लाह तआ़ला उन को अपनी रहमत से दूर कर देंगे, और उन को सदा रहने वाला अ़ज़ाब होगा(68)** (ऐ मुनाफ़िक़ों) **तुम्हारी हालत** (कुफ़्र और उस की सज़ावारी में) **उन लोगों की सी है जो तुम से पहले** (ज़माने में काफ़िर) **हो चुके हैं वो ताक़त में तुम से मज़बूत और माल और औलाद में तुम से भी ज़्यादा थे, तो उन्होंने अपने** (दुनिया के) **हिस्से से ख़ूब फ़ाइदे उठाए तो तुमने भी अपने** (दुनिया के)

हिस्से से ख़ूब फ़ाइदा उठाया जैसे तुम से पहले लोगों ने अपने (दुनिया के) हिस्से से फ़ाइदा उठाया था और तुम भी (बुरी बातों में) ऐसे ही घुसे जैसे वो लोग (बुरी बातों में) घुसे थे, उन लोगों के (नेक) काम दुनिया और आख़रत में (सब) बर्बाद हो गये (कि दुनिया में उन कामों पर सवाब की ख़ुशख़बरी नहीं और आख़रत में सवाब नहीं), और (इसी वजह से) वो लोग बड़े नुक़सान में हैं (इसी तरह तुम भी नुक़सान उठाओ)(69) क्या इन लोगों को उन (के हलाक व सज़ा) की ख़बर नहीं पहुंची जो इन से पहले हुए हैं जैसे क़ौमे नूह की और आद की और समूद की और क़ौमे इब्राहीम की और मदयन वाले और उल्टी हुई बस्तियां (क़ौमे लूत की), कि उन के पास उन के पैग़म्बर साफ़ निशानियां (सच्चे दीन की) लेकर आए (लेकिन न मानने से बर्बाद हुए), सो (इस बर्बादी में) अल्लाह तआ़ला ने तो उन पर ज़ुल्म नहीं किया लेकिन वो ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे (इसी तरह इन मुनाफ़िक़ों को भी डरना चाहिए)(70) और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें आपस में एक दूसरे के मददगार हैं, अच्छी बातें सिखाते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह और उसके रसूल का कहना मानते हैं, उन लोगों पर ज़रूर अल्लाह तआ़ला रहमत करेगा, बेशक अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त (क़ुदरत वाला) हिकमत वाला है(71) अल्लाह तआ़ला ने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों से ऐसे बाग़ों का वादा कर रक्खा है जिन के नीचे नहरें बहती होंगी जिन में सदा रहेंगे और शानदार मकानों का (वादा कर रक्खा है) जो कि उन सदा बहार बाग़ों में होंगे, और (इन सब नेमतों के साथ) अल्लाह तआ़ला का राज़ी होना (जो जन्नत वालों से सदा के लिए होगा इन) सब (नेमतों) से बड़ी चीज़ है, यह (अच्छा बदला) बड़ी कामयाबी है(72)।

नोटः- हदीसों से पता चलता है कि आख़ीर ज़माने में मुसलमान भी यहूदियों व ईसाइयों के तरीक़े पर चलने लगेंगे जिस की वजह ईमान की कमी होगी। इस का बहुत ध्यान रखने की ज़रूरत है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ اغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۷۳﴾ يَحْلِفُوْنَ
بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَ لَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَ هَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَ مَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ
اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَ اِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا
اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ وَ مَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٍ ﴿۷۴﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا
مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَ تَوَلَّوْا وَّ هُمْ

مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَ بِمَا كَانُوْا
يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَ نَجْوٰىهُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾ اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ
الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ
اللّٰهُ مِنْهُمْ ۫ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾ اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً
فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٨٠﴾

आयत न० 73 से 80

ऐ पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **काफ़िरों से** (तलवार से) **और मुनाफ़िक़ों से** (ज़बान से) **जिहाद कीजिए और उन पर सख़्ती कीजिए,** (दुनिया में तो ये इसके हक़दार हैं) **और** (आख़रत में) **इन का ठिकाना दोज़ख़ है, और वो बुरी जगह है(73) वो लोग अल्लाह की क़समें खा जाते हैं कि हमने वो बात नहीं कही** (कि पैग़म्बर को क़त्ल कर देंगे)**, जब कि बेशक उन्होंने कुफ़्र की बात कही थी** (क्योंकि पैग़म्बर के क़त्ल की बात करना कुफ़्र ही है) **और** (वो बात कह कर) **अपने** (दिखावे के) **इस्लाम के बाद** (खुले) **काफ़िर हो गये** (चाहे अपने ही लोगों में सही जिस की ख़बर मुसलमानों को भी हो गई और इससे आम लोगों में कुफ़्र खुल गया) **और उन्होंने ऐसी बात का इरादा किया था जो उन के हाथ न लगी** (कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल करना चाहा मगर नाकाम रहे) **और उन्होंने सिर्फ़ इस बात का बदला दिया है कि उन को अल्लाह ने और उसके पैग़म्बर ने अपनी महरबानी से मालामाल कर दिया** (इस अहसान का बदला उन के नज़दीक ये ही होगा कि बुराई करें)**, अब अगर** (इसके बाद भी) **तौबा करें तो उन के लिए** (दोनो जहान में) **बहुत अच्छा होगा** (जैसा कि कुछ ने तौबा की)**, और अगर** (तौबा से) **मुंह मोड़ें** (और कुफ़्र व निफ़ाक़ ही पर जमे रहें) **तो अल्लाह तआला उन को दुनिया और आख़रत** (दोनो जगह) **में दर्दनाक सज़ा देगा और उन का दुनिया में न कोई यार है न मददगार** (कि सज़ा से बचाले)**(74) और इन** (मुनाफ़िक़ों) **में कुछ आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला से पक्का वादा करते हैं** (पैग़म्बर के वास्ते से कि) **अगर अल्लाह तआ़ला हम को अपनी महरबानी से** (बहुत सा माल) **देदे तो हम** (उस में से) **ख़ूब ख़ैरात करें और हम** (इस के वास्ते से) **ख़ूब नेक-नेक काम किया करें(75) सो जब अल्लाह तआ़ला ने उन को अपनी महरबानी से** (बहुत सा माल) **दे दिया तो उसमें कन्जूसी करने लगे** (कि ज़कात न दी) **और** (ताबेदारी से)

मुंह मोड़ने लगे और वो तो मुंह मोड़ने के (पहले ही से) **आदी हैं**(76) **सो अल्लाह तआ़ला ने उन** (के इस काम) **की सज़ा में उन के दिलों में निफ़ाक़ जमा दिया** (यानी सच्चे मुसलमान न होंगे और) **जो अल्लाह के पास जाने के दिन तक** (यानी मरते दम तक) **रहेगा इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह तआ़ला से जो वादा किया उससे हट गये और इस वजह से कि वो** (इस वादे में शुरू ही से) **झूट बोलते थे** (यानी उस वक़्त भी वादा पूरा करने की नीयत न थी)(77) **क्या उन** (मुनाफ़िक़ों) **को यह पता नहीं कि अल्लाह तआ़ला को उन के दिल का राज़ और उन के छुपे मशवरों की सब ख़बर है और यह कि अल्लाह तआ़ला सभी छुपी बातों को अच्छी तरह जानते हैं** (इसलिए वो दिखावे का इस्लाम और ताबेदारी उन के काम नहीं आसकते ख़ास कर आख़रत में बस जहन्नम की सज़ा ज़रूरी है)(78) **ये** (मुनाफ़िक़ लोग) **ऐसे हैं कि ख़ैरात करने वाले मुसलमानों को** (थोड़ा देने पर) **ताना देते हैं और** (ख़ास कर) **उन लोगों को** (और ज़्यादा) **जो सिवाए मेहनत मज़दूरी** (की आमदनी) **के और कुछ नहीं रखते** (और वो बेचारे इसी मज़दूरी में से हिम्मत करके कुछ ख़ैरात कर देते हैं तो ये) **उन का मज़ाक़ उड़ाते हैं** (यानी ताने तो सब को देते हैं कि क्या थोड़ी सी चीज़ ख़ैरात में लाए हो और मेहनत मज़दूरी करने वाले ग़रीबों का मज़ाक़ भी उड़ाते हैं कि लो ये भी ख़ैरात देने के क़ाबिल हो गये), **अल्लाह तआ़ला उन को मज़ाक़ उड़ाने का** (तो ख़ास) **बदला देगा, और** (वैसे ताना देने का यह बदला मिलेगा कि) **उन के लिए** (आख़रत में) **दर्दनाक सज़ा होगी**(79) (और ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप चाहे उन** (मुनाफ़िक़ों) **के लिए मुआ़फ़ी मांगें या न मांगें** (दोनो हाल बराबर हैं कि उन को इससे कोई नफ़ा नहीं होगा उन की मुआफ़ी नहीं होगी), **अगर आप उन के लिए सत्तर बार भी** (यानी बहुत ज़्यादा) **मुआ़फ़ी मांगें तब भी अल्लाह तआ़ला उन को मुआ़फ़ न करेगा, यह इस वजह से है कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़्र किया, और अल्लाह तआ़ला ऐसे नाफ़रमान लोगों को** (जो कभी ईमान की चाहत ही न करे सच्चाई का) **रास्ता नहीं दिखाता** (इस वजह से ये उम्र भर कुफ़्र पर जमे रहे और उसी पर मर गये)(80)।

नोटः- (1) जंगे तबूक से वापसी के वक़्त बारह आदमी मुनाफ़िक़ों में से पहाड़ की एक घाटी में इस इरादे से छुप कर बैठ गये थे कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यहां पहुंचेगे एक बार हमला करके आप को क़त्ल कर देंगे। हज़रत जिब्रील ने आप को ख़बर देदी तो आप रास्ते से हट गये और उन की चाल नाकाम हो गई।

(2) सालबा नामी एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दुआ कराई थी कि वो मालदार हो जाए और ख़ूब ख़ैरात करने का वादा किया। लेकिन मालदार होने के बाद वादे से फिर गया।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ كَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَ قَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿۸۱﴾ فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّ لْيَبْكُوْا
كَثِيْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۸۲﴾ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ
تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّ لَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿۸۳﴾
وَ لَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّ لَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ مَاتُوْا وَ هُمْ
فٰسِقُوْنَ ﴿۸۴﴾

आयत न० 81 से 84

ये (जंगे तबूक में जाने से) **पीछे रह जाने वाले** (मुनाफ़िक़ लोग) **ख़ुश हो गये रसूलुल्लाह** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **के** (जाने के) **बाद अपने** (घरों में) **बैठे रहने पर और उन को अल्लाह की राह में अपने माल और जान के साथ जिहाद करना पसन्द न आया** (दो वजह से एक तो कुफ़्र दूसरे आराम तलबी) **और** (दूसरों को भी) **कहने लगे कि तुम** (ऐसी तेज़) **गर्मी में** (घर से) **मत निकलो, आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि जहन्नम की आग** (इससे भी) **ज़्यादा** (तेज़ और) **गर्म है** (सो इस गर्मी से तो बचते हो और जहन्नम में जाने का ख़ुद सामान कर रहे हो कि कुफ़्र और मुख़ालफ़त को नहीं छोड़ते), **क्या अच्छा होता अगर वो समझते**(81) **सो** (दुनिया में) **थोड़े दिनों हंस** (खेल) **लें और** (फिर आख़रत में) **बहुत दिनों** (यानी सदा) **रोते रहें** (यानी हंसना थोड़े दिनों का है फिर रोना सदा-सदा का), **उन कामों के बदले में जो कुछ** (कुफ़्र व मुख़ालफ़त) **किया करते थे**(82) (जब आप को उन मुनाफ़िक़ों का हाल पता चल गया) **तो अगर अल्लाह तआ़ला आप को** (इस सफ़र से मदीने को सही सालिम) **उन के किसी गिरोह की तरफ़ वापस लाए** (और) **फिर ये लोग** (चापलूसी में और अपने पिछले इल्ज़ाम उतारने को आप के साथ जिहाद में) **चलने की इजाजत मांगें** (और दिल में उस वक़्त भी ये ही इरादा होगा कि ऐन वक़्त पर बहाना कर देंगे) **तो आप यह कह दीजिए कि तुम कभी मेरे साथ** (जिहाद में) **न चलोगे और न मेरे साथ मिल कर किसी** (दीन के) **दुशमन से लड़ोगे** (जो कि असल चीज़ है, क्योंकि) **तुम ने पहले भी बैठे रहने को**

पसन्द किया था (और अब भी इरादा वो ही है) **तो** (बेबात झूटी बातें क्यों बनाते हो बल्कि पहले की तरह अब भी) **उन लोगों के साथ बैठे रहो** (जो सचमुच) **पीछे रह जाने के लाइक़ ही हैं** (जैसे बूढ़े, औरतें और बच्चे)(83) **और** (ऐ पैग़म्बर) **उन** (मुनाफ़िक़ों में से जो) **कोई मर जाए तो उस** (के जनाज़े) **पर कभी नमाज़ न पढ़िए और न** (दफ़नाने के वास्ते) **उस की क़ब्र पर खड़े होइये,** (क्योंकि) **उन्होंने अल्लाह और उस के पैग़म्बर के साथ कुफ़्र किया है और वो कुफ़्र की हालत ही में मरे हैं**(84)।

मसअलाः-यहां मालूम हुआ कि किसी काफ़िर के जनाज़े की नमाज़ और उस के लिए बख़्शिश की दुआ जाइज़ नहीं। और यह भी साबित हुआ कि किसी काफ़िर की इ़ज़्ज़त व इकराम (मान सम्मान) के लिए उस की क़ब्र पर खड़ा होना या उस की ज़ियारत के लिए जाना हराम है। लेकिन सीख लेने के लिए या किसी मजबूरी में जाना हो तो अलग बात है। जैसा कि हिदाया किताब में है कि अगर किसी मुसलमान का काफ़िर रिशतेदार मर जाए और उस का कोई वारिस नहीं तो मुसलमान रिशतेदार उस को उसी तरह बग़ैर सुन्नत तरीक़े के दबा सकता है। (बयानुल क़ुरआन)

وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ
كٰفِرُوْنَ ۝۸۵ وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا
ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝۸۶ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝۸۷ لٰكِنِ
الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۡ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝۸۸
اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝۸۹ وَجَاۗءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ
الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۹۰

आयत न० 85 से 90

और उन (मुनाफ़िक़ों) **के माल और औलाद** (का ज़्यादा होना) **आप को** (इस) **अचम्भे में न डाले** (कि ऐसे ग़द्दारों पर ये नेमतें कैसे हुईं तो ये उन के लिए नेमत व रहमत नहीं बल्कि दुनिया में भी अज़ाब ही है, क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला तो यह चाहते हैं कि इन चीज़ों की वजह से दुनिया में** (भी) **उन को अज़ाब में गरिफ़्तार रक्खे** (जैसा कि कमाने के चक्कर में हर घड़ी परीशान व बेचैन देखे जाते हैं) **और उन का दम काफ़िर होने की हालत में निकल जाए** (जिससे आख़रत में

भी अज़ाब में गरिफ़्तार रहें)(85) **और जब कभी कोई सूरत कुरआन की इस बारे में उतरती है कि तुम** (सच्चे दिल से) **अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के पैग़म्बर के साथ मिल कर जिहाद करो तो उनमें** (जिहाद में जाने की) **ताक़त रखने वाले** (मुनाफ़िक़) **आप से इजाज़त मांगते हैं और कहते हैं कि हम को इजाज़त दीजिए कि हम भी यहां ठहरने वालों के साथ रह जाएं** (लेकिन ईमान व सच्चाई के बारे में कुछ करना नहीं पड़ता उस को कह दिया कि हम तो सच्चे मुसलमान हैं)(86) **वो लोग घर में रहने वाली औरतों के साथ** (घरों में) **रहने पर** (बेशर्मी से) **राज़ी होगये और उन के दिलों पर बन्द लग गया जिससे वो** (इज़्ज़त और बेइज़्ज़ती को) **समझते नहीं**(87) **लेकिन रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **और आप के साथी जो मुसलमान हैं उन्होंने** (ज़रूर इस हुक्म को माना और) **अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया, और उन्हीं के लिए सारी भलाइयां हैं, और ये ही लोग कामयाब हैं**(88) (और वो भलाई और कामयाबी यह है कि) **अल्लाह तआ़ला ने उन के लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रक्खे हैं जिनके नीचे से नहरें बहती हैं** (और) **वो उन में सदा रहेंगे, और यह बड़ी कामयाबी है**(89) **और कुछ बहाने बाज़ लोग देहातियों में से आए ताकि उन को** (घर रहने की) **इजाज़त मिल जाए और** (उन देहातियों में से) **जिन्होंने अल्लाह और उस के पैग़म्बर से** (ईमान के दावे में) **बिल्कुल ही झूट बोला था वो बिल्कुल ही बैठ रहे** (झूटे बहाने करने भी न आए), **उन में जो** (अख़ीर तक) **काफ़िर रहेंगे उन को** (आख़रत में) **दर्दनाक अज़ाब होगा** (और जो तौबा कर लें तो अज़ाब से बच जाएंगे)(90)।

नोटः- मालदार और ख़ुशहाल काफ़िरों को माल व दौलत का मिलना नेमत व रहमत नहीं बल्कि दुनिया में भी अज़ाब है कि माल की मुहब्बत उस की हिफ़ाज़त और फिर उस के बढ़ाने की फ़िक्र उन को ऐसी लगी रहती है कि किसी वक़्त किसी हाल चैन नहीं लेने देती। और उस माल का गुनाह के कामों में ख़र्च होना आख़रत के अज़ाब को बढ़ा देता है।

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ
مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾ وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ
مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۪ تَوَلَّوْا وَّ اَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى
الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

आयत न० 91 से 93

कमज़ोर लोगों (और बूढ़ों) **पर** (जिहाद में न जाने का) **कोई गुनाह नहीं और न बीमारों पर और न उन लोगों पर जिन के पास** (जिहाद के सामान की तैयारी में) **ख़र्च करने को कुछ नहीं जब कि ये लोग अल्लाह और उस के पैग़म्बर के साथ** (और हुक्मों में) **सच्चाई रक्खें,** (और दिल से ताबेदारी करते रहें तो) **उन नेक लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह तआ़ला बड़े मुआ़फ़ करने वाले बड़ी रहमत वाले हैं** (कि अगर ये लोग सचमुच मजबूर हों और अपनी हिम्मत भर कोशिश करें और फिर भी कुछ कमी रह जाए तो मुआ़फ़ कर देंगे)(91) **और न उन लोगों पर** (कोई गुनाह और इलज़ाम है) **कि जिस वक़्त वो आप के पास इस वास्ते आते हैं कि आप उन को कोई सवारी देदें और आप** (उन से) **कह देते हैं कि मेरे पास तो कोई चीज़ नहीं जिस पर मैं तुम को सवार करा दूं तो वो** (नाकाम) **इस हालत से वापस चले जाते हैं कि उन की आंखों से आंसू बहते होते हैं इस ग़म में कि** (अफ़सोस) **उन के पास** (जिहाद के सामान की तैयारी में) **ख़र्च करने को कुछ नहीं है** (न अपने पास है और न दूसरी जगह से मिला ऐसे मजबूर लोगों से कोई पूछताछ नहीं)(92) **बस इल्ज़ाम तो सिर्फ़ उन लोगों पर है जो सामान वाले** (ताक़त वाले) **होने के बावजूद** (घर पर रहने की) **इजाज़त चाहते हैं, वो लोग** (बहुत बेशर्मी से) **घर में रहने वाली औरतों के साथ रहने पर राज़ी हो गये और अल्लाह ने उन के दिलों पर बन्द लगा दिया जिससे वो** (गुनाह व सवाब को) **जानते ही नहीं**(93)।

नोटः- जो लोग सवारी न मिलने की वजह से रोते हुए वापस हुए और रोते रहे तो अल्लाह तआ़ला ने उन के लिए ऐसा सामान कर दिया कि छः ऊंट रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास उसी वक़्त आ गये। आप ने ये उन को दे दिये । (मज़हरी)

और उन में से बहुत से आदमियों के लिए सवारी का इन्तिज़ाम हज़रत उ़स्मान रज़ि० ने कर दिया। फिर भी कुछ रहे कि जिन को आख़ीर तक सवारी न मिली और मजबूर हो कर रह गये। ऊपर आयतों में उन्हीं सब हज़रात का ज़िक्र आया है जिन की मजबूरी अल्लाह ने मान ली और बता दिया कि वबाल सिर्फ़ उन लोगों पर है जिन्होंने हिम्मत के बावजूद जिहाद से ग़ैर हाज़िर रहना पसन्द किया।